ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

जनवरी-2020

ऋतुराज बसंती....

जीवन के रंग - राग बसंती
यौवन का उन्माद बसंती
फूली सरसों पीली वाला
सिर पर देखो पाग बसंती
तिनके- तिनके में है मस्ती
आया है ऋतुराज बसंती ।।

खिला-खिला और खुला -खुला सा
आसमान भी धुला - धुला सा
तरुणाई की रंगत वाला
सूरज चंदा का झूला सा
रंग रूप और गंध सुगंधित
आया है ऋतुराज बसंती
स्वागत है सरताज बसंती ।।

- डॉ. जगदीप शर्मा राही

₹20

प्रकाशन का 21वां वर्ष

जीन्द महिला आर्य समाज की स्तम्भ तपस्विनी माता सरला गोयल धर्मपत्नी स्व. श्री जयदेव गोयल का आर्य समाज जीन्द शहर द्वारा स्वामी श्रद्धांनन्द बलिदान दिवस पर आयोजित भव्य समारोह में सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

इंदौर मध्यप्रदेश के सबसे पुराने आर्यसमाज मल्हारगंज में स्वामी श्रद्धानंद के जीवन पर मित्र मेला वेलफेयर सोसायटी द्वारा प्रयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. विवेक आर्य का व्याख्यान और सम्मान।

शांतिधर्मी परिसर में आयोजित पूर्णिमा महोत्सव के दृश्य

विश्व पुस्तक मेला में शांति धर्मी मासिक के सम्पादक श्री सहदेव समर्पित जी , श्री संजय धौलपुरिया जी , श्री मनोज कुमार जी, हिन्दी सेविका सुमन भाटी जी द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर प्रो. (डॉ.) नरेश सिहाग बोहल की पुस्तकों का विमोचन किया गया।

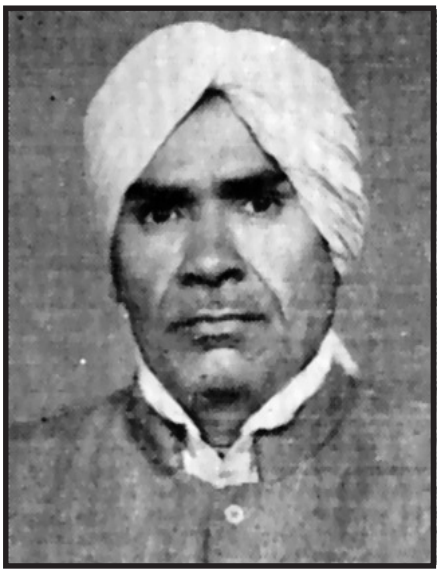

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित

(चलभाष **09416253826**)

उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री

प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण

आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य

सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा

डॉ० विवेक आर्य

विधि परामर्शक : डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट

सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

श्रीपाल आर्य, बागपत

महेश सोनी, बीकानेर

भलेराम आर्य, सांघी

कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

कार्यालय व्यवस्थापकः रविन्द्रकुमार आर्य

कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	: २०.०० रु०
वार्षिक	: २००.०० रु०
दस वर्ष	: १५००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

नियमित प्रकाशन का इक्कीसवां वर्ष

जनवरी, २०२० ई०

वर्ष : २१ अंक : १२ पौष-माघ २०७६ विक्रमी

स ष्टि संवत्-१९६०८५३१२०, दयानन्दाब्द : १९६

आलेख

सामवेद अनुशीलन (त्वदीयं वस्तु गोविन्द) ८

आतंकवाद का प्रत्यक्ष युद्ध (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ९

हमारा धर्म हमारा राष्ट्र और हमारा युवक (राष्ट्र-चिन्तन) ११

उन्नति की सीढ़ी है जिज्ञासा (सामाजिक उन्नति) १३

कैसा हो पति और पत्नी का संबंध (घरा-परिवार) १५

अमर बलिदानी वीर हकीकत राय १६

एक विस्मृत लोकनायक दुल्ला भट्टी (इतिहास) १८

हमारे आदर्श पुरुष (प्रेरणा स्तम्भ) १९

अब मैं कौन उपाय करूँ (आत्मिक उन्नति) २१

सर्वोपयोगी फल आंवला (स्वास्थ्य चर्चा) २४

कविता : १०,

कथा/संस्मरण : आपबीती (कहानी)-१७ , भजनोपदेशक का रौद्र रूप-२०, माँ का मन, महानता की नींव-२७

स्तम्भ : बालवाटिका-२६, भजनावली-२८, बिन्दु बिन्दु विचार-३४

ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

कार्यालय

सम्पादक शांतिधर्मी, **पो बाक्स नं० 19**

मुख्य डाकघर जींद 126102

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द–१२६१०२ (हरि०)

दूरभाष : 9996338552

ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

सह-अस्तित्त्व के सूत्र

❒सहदेव समर्पित

सौहार्दपूर्ण सहअस्तित्त्व हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, लेकिन इसमें बहुत से किन्तु परन्तु भी हैं। हमें यह याद रखना चाहिये कि यह हमारी संस्कृति का अंग है। हम जिसके साथ सहअस्तित्त्व चाहते हैं, यह आवश्यक है कि यह उसकी संस्कृति का भी अंग हो। सच्चाई से कब तक छुपा जा सकता है। हमारे इतिहास की क्रूरताओं के बाद भी और हमारे नेताओं के एक शताब्दी के भरसक आत्मसमर्पण के बाद भी हमारे देश में दो समुदायों के मध्य अविश्वास समाप्त नहीं हुआ तो अवश्य ही सोचना पड़ेगा कि कहीं न कहीं मूल में भूल अवश्य है। इतिहास भुलाने या भुलवाने के भी बहुत प्रयास हुए, किन्तु यह इतनी कड़वी सच्चाई है कि कुछ समय के बाद फिर-फिर किसी न किसी रूप में सामने आ ही जाती है। इसके कारणों और उपायों पर चिन्तन न होने के कारण ही इस समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा है।

महर्षि दयानन्द के अनुसार एक मत, एक भाषा-- के बिना इस देश का पूर्ण हित संभव नहीं है। जो लोग यह कहते हैं कि धर्म के नाम पर संसार में खून खराबे हुए हैं, वस्तुतः वे लोग समस्या के मूल में नहीं जाना चाहते और समस्या को उलझाये रखने में ही उनका हित है। धर्म के नाम पर खून खराबे का इतिहास से एक भी उदाहरण नहीं दिया जा सकता। जितने खून खराबे हुए हैं वे सब मत-मतान्तरों के हुए हैं। अब पहले तो इन्होंने मुर्गी का नाम बकरी रख दिया, और अब कहते हैं कि हमारी बकरी ने अण्डा दिया है। पहले तो मत-मतान्तरों/मजहबों का नाम धर्म रख दिया और अब मत मतान्तरों के सारे दोष धर्म पर मढ़ रहे हैं। इस धोखाधड़ी में देश की तीन पीढ़ियाँ बरबाद हो गई हैं और अब भी समस्या का समाधान कहीं नजर नहीं आता।

सबसे पहले तो हमें उस धर्म को समझने की आवश्यकता है, जिससे मनुष्यों का पूर्ण हित हो सकता है और जिसके मुकाबले में संकुचित अर्थों वाले मत मतान्तरों को खड़ा कर दिया गया। चार से पांच हजार वर्ष पूर्व सत्य सनातन वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई मत प्रचरित नहीं था। समस्त संसार में एक वेद मत का प्रचार था और उस प्रचार का केन्द्र भारतवर्ष था। यहाँ के जन्मे हुए श्रेष्ठ सदाचारी विद्वानों से विश्व भर के लोग अपने अपने कर्त्तव्य कर्मों और आचारों की शिक्षा लेते थे। तब राजव्यवस्था धर्म की चेरी थी, धर्म राज्य व्यवस्था का पिछलग्गू नहीं था। सर्वत्र धर्म का साम्राज्य था। मनुष्य सामाजिक रूप से पक्षपातरहित, परोपकार, दया, करुणा आदि उदात्त भावनाओं के वातावरण में व्यक्तिगत रूप से सर्वविध उन्नति करते हुए मोक्ष प्राप्ति को अपने जीवन का उद्देश्य मानता था। सर्वत्र सुख शांति थी। व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में अज्ञान, अन्याय, अभाव व अकर्मण्यता को समाप्त करते रहने के लिए चार वर्णों की व्यवस्था थी, जिन्हें व्यक्ति अपनी योग्यता व क्षमता तथा इच्छा से स्वयं चुनता था। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष परम पुरुषार्थ माने जाते थे। मनुष्य समाज सर्वविध उन्नति करता था और समाज के सभी अंग समाज की उन्नति में सहायक थे। इसीलिए आध्यात्मिकता के साथ साथ ज्ञान विज्ञान भी अत्युन्नत और चरम था। महाभारत के पश्चात् अनेक विद्वानों, महारथियों, क्षत्रियों के विनाश के बाद यह व्यवस्था शिथिल पड़ने लगी। इसी देश में व्यवस्था खंड खंड हो गई, देशांतरों की व्यवस्था की बात ही क्या थी। जिसको जहाँ अधिकार मिला वह वहीं अपना अधिकार जमाकर बैठ गया।

धर्म व्यवस्था भी खण्डित हो गई। एक ईश्वरीय वेद मत के स्थान पर अनेक मनुष्यकृत मतों का प्रचार हुआ। उनमें वाद-विवाद भी हुए, पर उनमें एक शिष्टाचार रहा कि उन्होंने अपने मत मतान्तरों को मत/सम्प्रदाय ही कहा, उसे धर्म का नाम नहीं दिया। भारतीय लोगों की एक आम समझ थी कि मत तो विचार है जो किन्हीं मामलों में भिन्न हो सकता है, पर धर्म का संबंध आचरण से है। यह सबका अलग अलग नहीं हो सकता। धर्म का अर्थ है-दया, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, संयम, शुद्धि, सत्य, शांति, सहअस्तित्व। यह एक सूत्र था जो उन्हें जोड़ता था। लेकिन जब हिंसा, क्रूरता, निर्दयता को धर्म कहा जाने लगा तो यह सूत्र टूट गया। एक बच्चा कुत्ते को मारता है तो उसकी माँ रोकती है- ना बेटा पाप लगेगा। एक दूसरा बच्चा होश संभालते ही बकरे को कटते देखता है, भांय भांय करते हुए, 'धर्म' के नाम पर-- तो उनके बीच सहअस्तित्त्व का सूत्र क्या होगा? और उस सूत्र की खोज किये बिना समस्या का समाधान कैसे होगा? वह सूत्र अपने पूर्वजों की मातृभूमि के प्रति, उनकी संस्कृति के प्रति सम्मान का ही हो सकता है। जब इस देश में अब्दुल कलाम हो सकते हैं और अशफाक आर्यसमाज में भी नमाज पढ़ सकते हैं तो इस देश में सह अस्तित्त्व असंभव तो नहीं है। पर इसके लिए आवश्यक है राष्ट्र-भावना। अपने मत को मानते हुए भी क्या इस देश की और अपने पूर्वजों की गौरवपूर्ण परम्पराओं और संस्कृति को 'अपना' नहीं माना जा सकता? राष्ट्र-भावना के लिये आवश्यक है राष्ट्रीय शिक्षा, जिसे देर-सवेर इस देश को स्वीकार करना ही होगा।

शांतिधर्मी के संस्थापक एवं आद्य सम्पादक
स्व0 श्री चन्द्रभानु आर्योपदेशक की छठी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलियाँ

स्व० पं० चन्द्रभानु जी की पुण्य तिथि पर उनसे सम्बंधित अनेक संस्मरण आँखों के आगे घूम रहे हैं। वे एक महान उपदेशक थे। उनसे आर्यसमाज के लिये समर्पित होने की प्रेरणा लेनी चाहिये। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों की दुन्दुभि बजा अलख जगाने का महान कार्य करने वाले, जीवन पर्यन्त सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ रखने वाले, नारी जाति के उन्नयन के पोषक, समाज में समरसता का बीजारोपण करने वाले, बेबाक शैली में वेदोपदेश करने वाले, मन-वचन और कर्म से सन्त, वैदिक संस्कृति के पोषक परम श्रद्धेय पिताश्री पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक जी आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी उच्च विचारधारा सदैव हमारा मार्गदर्शन करेगी। पं० चन्द्रभानु जी द्वारा रोपित शान्तिधर्मी रूपी पौधा आज उनके आदर्शों पर चलने वाले अर्थात् पिताश्री के अनुव्रती श्री सहदेव समर्पित जी व परिवारजन द्विगुणित ताकत से सींच रहे हैं, फलस्वरूप वटवृक्ष बन गया है। हम गर्व की अनुभूति करते हैं, पं० चन्द्रभानु जी अन्धकार को दूर करने को जो दीपक जलाकर गये, श्री सहदेव समर्पित जी के कुशल मार्गदर्शन में उसकी लौ को निरन्तर बढ़ाने का काम हो रहा है। उनकी पुण्यतिथि पर हम पं० जी का भावपूर्ण स्मरण करते हैं तथा दृढ़ता से विश्वास व्यक्त करते हैं जीवन पर्यन्त उनकी शिक्षाओं और आदर्शों पर चलकर समाज की दशा और दिशा बदलने के उनके स्वप्न को साकार करने की हेतु अनवरत कार्य करेंगे तथा आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रवाह की गति मन्द न पड़ने देंगे। महामानव सच्चे आर्यपुत्र को कोटि-कोटि नमन।

देवेन्द्रकुमार आर्य, एडवोकेट,
जिला अध्यक्ष, राष्ट्र वन्दना मिशन, बागपत

हमें भी ताऊजी का भरपूर स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मैं समय-समय पर उनके मार्गदर्शन व आशीर्वचन से लाभान्वित हुआ। उनको मेरा शत शत नमन।

डॉ० अश्विनीकुमार आर्य
पूर्व प्रधान आर्यसमाज जींद जंक्शन

आर्यसमाज को ही नहीं अपितु सर्वजन को अपनी प्रखर, ओजस्वी वाणी एवं मधुर, प्रेरक, सारगर्भित भजनों द्वारा एक नई दिशा प्रदान करने वाले श्रद्धेय पंडित जी को शत शत नमन। मैं भी उन भाग्यशाली जनों में से हूँ जिन्हें पंडित जी का सानिध्य, आशीर्वाद, भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ।

(श्रीमती) विनीता गुलाटी
मंत्री, आर्यसमाज जींद शहर

पंडित जी को नमन। बाल्यास्था से युवावस्था तक अनेक बार पंडितजी को अपने पैतृक जनपद जीन्द में श्रवण किया। १९९५ में मेरे गांव डाहौला में प्रान्तीय सम्मेलन में भी वे आए। छटी कक्षा के विद्यार्थी के रूप में पिताजी के साथ महाशय जी के भजन सुनते थे। उन्हीं के द्वारा बताए गए वेद मार्ग का अनुसरण करते हुए मुझे भी बतौर वैदिक प्रक्ता वेद प्रचार-प्रसार करते हुए लगभग १२ वर्ष हो चले। अभी कुछ दिन पूर्व मा० राय सिंह आर्य घोघडिया के चले जाने से भी जनपद जीन्द की भारी क्षति हुई। वे भी यथाशक्ति, यथासामर्थ्य वेद-प्रचार में लगे रहे। उनको भी और महाशय जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

आचार्य जयवीर वैदिक वैदिक प्रवक्ता,चंडीगढ़

मै वर्ष १९७७ में आर्यसमाज जीन्द हरियाणा में रहता था। प्रभाकर का विद्यार्थी था। पूज्य पंडित चन्द्रभानु जी प्रचार करने जीन्द में आते थे। मैं भोजन बना कर सेवा करता, वे मुझे उपदेश करते। मेरे गाँव रधाना में आर्यसमाज की स्थापना की और मुझे आर्यसमाजी बनाया, जनेऊ दिया। जिसके कारण हमारे पूरे परिवार का विकास हुआ। कोटि कोटि नमन। अब इस कार्य को बहुत विद्वान भाई सहदेव शास्त्री जी आगे बढ़ा रहे हैं। धन्यवाद।

सूर्यदेव आर्य योगाचार्य, (रधाना)
न्यू कृष्णा कालोनी जींद

आदरणीय चंद्रभानुजी के साथ हमारा अत्यंत पारिवारिक संबंध था। वे उच्च कोटि के भजनोपदेशक और वैदिक विद्वान थे। पिताजी के साथ उनके आत्मीय संबंध थे। कई बार उनके घर आना जाना भी हुआ। ऐसे वेदानुयायी भजनोपदेशक आज के दिन आर्यसमाज में विरले ही देखते हैं। आदरणीय गुरुवर को मेरा शत शत नमन है।

डॉ० सुधीर कुमार आचार्य, संस्कृत विभाग
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

मुझे सम्माननीय पं० जी के दर्शन आर्यसमाज बीकानेर के वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम में हुए थे। सात दिन साथ साथ रहे। वे सच, वेदानुकूल जीवन जीने वाले थे। स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन, मधुर वाणी, सरल स्वभाव उनका व्यक्तित्व था। बनावट, अहंकार, द्वेष आदि से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। अपने गुरु स्वामी भीष्म जी का हृदय से सम्मान करते थे। उनके सुपुत्र सहदेव जी उनके कार्यों को जीवंत रूप प्रदान कर उन्हीं का सम्मान बढ़ा रहे हैं। जो हम सबके लिए प्रेरणाप्रद है। ससम्मान।

डॉ० देवशर्मा वेदालंकार, दिल्ली

नमन। पंडित जी का सत्संग मुझे जाने कितनी बार सुनने को मिला। मैं उनके जीवन संघर्ष का प्रत्यक्ष और सहदेव जी के माध्यम से साक्षी रहा। धर्म-प्रचार के लिए उनकी लगन और तड़प का मेरे ऊपर बहुत प्रभाव है। वे ज्ञान और अनुभव के कोष थे। आज भी उनकी आत्मीयता, मधुरता मन को हर्ष और उत्साह से भर देती है।

डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ, दिल्ली

पं० चन्द्रभानु जी का हमारे घर गोहाना में निरन्तर आना जाना था। मेरे पिता श्री सुखदयाल आर्य स्वयं भी गीत और भजन गाते थे। चन्द्रभानु जी को मैंने अनेक बार सुना है। मेरे पिता ने अनेक बार उनके कार्यक्रम हमारे घर के साथ वाले मैदान में कराए, तब उनका रात्रि आवास हमारे घर में ही होता था। प्रचार की वह मधुर स्मृति आज भी मेरे मस्तिष्क में तरोताजा है। अतः उनके लिए मेरी सादर श्रद्धास्मृति है।

प्रो० वी के अलंकार
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग एवं
अध्यक्ष Dayanand Chair for Vedic Studies
पंजाब विविद्यालय, चंडीगढ

महर्षि स्वामी दयानन्द जी के भक्त श्रद्धेय चन्द्रभानु जी को हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजलि और कोटि कोटि प्रणाम।

हरिश्चन्द्र स्नेही, सोनीपत

आर्य जगत के महान भजनोपदेशक, जोशीली आवाज के धनी पूज्य श्री चन्द्रभानु जी को कोटि-कोटि नमन। आर्य संस्कृति को घर-घर तक पहुंचाने के कारण सिवाहा गांव इनका सदैव ऋणी रहेगा।

आर्य रघुवीरसिंह सिवाहा, जिला जींद

आदरणीय पण्डित चंद्रभानु आर्य जी का कार्य आज भी जन-जन को आलोकित कर चन्द्र की तरह अपनी आभा बिखेर रहा है। ऐसी पुण्य आत्मा को परलोक में भी हमारा नमन स्वीकार हो।

पूरनचन्द नागर, मण्डी कालांवाली, जिला सिरसा

बहुत पहले हमारे गांव (भेरां भिवानी) में स्व० पण्डितजी के बहत प्रभावशाली भजनोपदेश सुने थे। वे हमारे परिवार में ही किसी शादी समारोह में पधारे थे। आज भी उनके द्वारा रचित भजन हमारे सेक्टर ६ के सीनियर सिटीजन क्लब, बहादुरगढ़ में शाम को बुजुर्ग महिलाएं गाती हैं। उन्हें सुनकर हम आर्नंदित होते हैं और पंडितजी की यादें ताजा हो जाती हैं, उनको श्रद्धापूर्वक नमन है।

सुकर्मपाल सांगवान, सैक्टर ६ बहादुरगढ़

आर्यसमाज व गुरुकुल घरौंडा के उत्सवों में कई बार स्व० पण्डितजी को सुनने का अवसर मिला। बड़े सरल और मिलनसार स्वभाव के थे। सादर नमन।

प्रकाशवीर

स्व० पं० जी की रचना बहुत ही गूढ, गम्भीर और तत्त्वपूर्ण रचना है। पं० लख्मीचन्द की ब्रह्मज्ञान वाली रचनाओं के आस-पास की रचना दिखलाई पड़ती है।
ब्रह्मज्ञानी तत्त्वचिंतक को शत-शत नमन।

डॉक्टर राही कवि व साहित्यकार, नरवाणा, जींद

ऋषिभक्त, वेदानुयायी, आर्यसमाज की धरोहर, आदर्श भजनोपदेशक, पूज्य श्री चन्द्रभानु जी को विनम्र श्रद्धांजलि और शत शत नमन।

रामफल सिंह, पूर्व प्रधान, आप्रसभा हि० प्र०

ऋषि दयानन्द और वेदों के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले श्रद्धेय पंडित चंद्रभान आर्य जी की पुण्य स्मृति दिवस पर शत-शत नमन, विनम्र श्रद्धांजलि।

पं० संदीप वैदिक, आर्यभजनोपदेशक

स्वर्गीय पंडित चन्द्रभानु आर्य जी को कोटि कोटि नमन। उनके गाये भजन/कविताएं वर्षों तक हमें जीवन जीने का संदेश देती रहेंगी।

नफेसिंह, गवर्नमैंट कन्ट्रैक्टर, जींद

पंडित जी को नमन। आर्य जी के साथ मेरा अच्छा सम्बंध था, जब मैं १९९५ में नरवाना में था।

आचार्य मुकेश चन्द्र

मैंने मेरे जीवन के अब तक के सफर में अनेकों उपदेशक, भजनोपदेशक, रागनी गायक, भजनीकों को सुन

लिया। लेकिन दादा जी की बात ही अलग है। किस्से व उपदेशक भजनों में दादा जी ने जो वार्ता कर रखी है, वह मैंने किसी अन्य से नहीं सुनी। दादा जी की वार्ता भी वाकई ज्ञानवर्धक है। छाती भरी आवाज सुनकर प्रेरणा तो मिली है ही साथ की साथ ज्ञान की वृद्धि हुई है। रचनाएं पढ़कर तो कई बार आश्चर्य में पड़ जाता हूं।

'चन्द्रभान तेरे ब्यान में भी आनंद के गोते हैं--'

अमित कुमार, सिवाहा

आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक व रचनाकार पं० चन्द्रभानु जी को शत २ नमन। उन्होंने जीवन भर ईश्वरीय वाणी वेद और स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों का प्रचार हरियाणा ही नहीं, अपितु भारतवर्ष के दूर सूदूर प्रान्तों में लगन व निष्ठा के साथ किया।

प्रताप आर्य भजनोपदेशक
ग्राम व पोस्ट कासमपुर मजरा पाडली
त० बेहट, जनपद सहारनपुर उ० प्र०

आपकी सम्मतियाँ

वैदिक ज्योति को जन जन में प्रकाशित करने वाली 'शान्तिधर्मी' पत्रिका की प्रगति हेतु शुभकामनाएं, संस्मरण प्रकाशित करने हेतु कोटि-कोटि धन्यवाद। समाज व परिवार में प्रेरणादायक होगा।

डॉ० श्वेतकेतु शर्मा पूर्व सदस्य
हिन्दी सलाहकार समिति
१०, केलाबाग, सावित्री सदन, बरेली

✉

जिनके साथ सह देव हो बाकी कुछ रह नही जाता
करतें हैं परमार्थ जो वही सहदेव की संगत पाता
पूर्ण लिखता शांति धर्मी की गाथा
सहदेव जी को दो अपार खुशियां मेरे विधाता,,,,हार्दिक शुभकामनाएं आदरणीय श्री जी

पूर्ण चन्द नागर
निकट डी०एन० कालेज, मंडी कालांवाली
जिला सिरसा-125201

✉

शान्ति धर्मी मासिक पत्रिका का मैं अगस्त २०१९ से नियमित पाठक बना हूं। निरंतर एक योगी के समान, नि:स्वार्थ श्रम साधना, शालीन व्यवहार, नवयुवकों के चरित्र निर्माण से सामाजिक उत्थान का संकल्प, मन में केवल राष्ट्र-प्रेम व विश्व बंधुत्व की भावना आदि की इस पत्रिका में स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। इस शुभ कार्य के लिए आपको अनन्त साधुवाद।

प्रा० सतीश कुमार
नारनौंद, जिला हिसार (हरियाणा) १२५०३९

✉

आध्यात्मिक मासिक पत्रिका शांतिधर्मी का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! पत्रिका में प्रकाशित शांतिधर्मी के संस्थापक स्वर्गीय पंडित चंद्रभानु आर्य भजनोपदेशक के जीवन परिचय से ज्ञान तथा उनके प्रति श्रद्धा में वृद्धि हुई! आत्मचिंतन में संपादकीय 'शाश्वत धर्म' आज की स्वार्थी, लालची तथा संकुचित मानसिकता का भाण्डाफोड़ करने वाला है। आज का मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में, उसका पालन पोषण तथा संरक्षण करने वाली प्रकृति का स्वयं ही सत्यानाश कर रहा है, जिसकी वह स्वयं उत्पत्ति है! जैसे-जैसे विकास तथा विज्ञान तरक्की कर रहा है, वैसे वैसे मनुष्य भौतिकतावाद के चक्रव्यूह में फंसा जा रहा है, उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो रही है, परमात्मा के प्रति सच्ची आस्था तो कम हो रही है लेकिन परमात्मा का नाम लेने का दिखावा तथा आडंबर बढ़ता जा रहा है! शाश्वत धर्म हमें सात्विक जीवन व्यतीत करने, आत्म संयम, संतोष, त्याग, समर्पण भावना, परहित, परलोक, शुचिता, सच्चाई, सकारात्मक सोच तथा वैदिक जीवन व्यतीत करने की सलाह देता है। जब तक हम शाश्वत धर्म के मुताबिक नहीं चलेंगे, हमें चैन नहीं मिलेगा, मन भटकता रहेगा, निराशा, चिंता, फिक्र यूं ही सताते रहेंगे। जीवन की गुणवत्ता में सुधार नहीं होगा, और परलोक सुधरने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता! इस लाजवाब संपादकीय के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं!

प्रोफेसर शामलाल कौशल (94163 59045)
मकान नंबर 975 बी
ग्रीन रोड, रोहतक 124 001 हरियाणा

सहदेव समर्पित की रचना,
पढ के मन में आनन्द भर्यो है।
भाव भरे अति सुन्दर छन्द,
सुशाब्द जहां कौ तहां ही धर्यो है।।
धर्म औ दर्शन जैसे विषय पर,
छन्द लिख्यो मन में न डर्यो है।
शुभ सीख धरी जिसने उर में,
वह मानव ही भवसिन्धु तर्यो है।।

पण्डित रामनिवास 'गुण ग्राहक'
धर्माचार्य, आर्यसमाज श्रीगंगानगर, राजस्थान

मेरी जान! तुझे वीर्य चाहिये–सात्विक वीर्य, शुभ शंकर शक्ति? तो इसका एक ही उपाय है–अग्नि–देव की उपासना अर्थात् यज्ञ। अग्नि–देव तेरे शरीर में जीवाग्नि के रूप में विद्यमान है। उसे सात्विक, पौष्टिक भोजन से, नियम–पूर्वक व्यायाम से, आत्म–संयम से, सात्विक स्वास्थ्यप्रद चिन्तन से, प्राणा याम से प्रदीप्त कर। इन प्रयत्नों के आलंबन से शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का वीर्य उत्पन्न होगा।

मेरी जान! तुझे सौभाग्य चाहिए–उत्तम ऐश्वर्य? सम्पत्ति हो, विपत्ति हो, तेरा सौभाग्य बना रहे? तेरे माथे पर तेवर न चढ़ें? तुझे मंगल ही मंगल की अनुभूति हो? तो यज्ञ कर। अग्नि–देव की उपासना में लगा रह। यज्ञ की वृत्ति असफलता को भी सफलता का रूप दे देती है। यज्ञार्थ कर्म फल की कामना से रहित होते हैं। इनकी सफलता इनके अनुष्ठान की सुन्दरता में है। यदि इन कार्यों के करते अधर्म का अवलम्बन नहीं हुआ तो सांसारिक दृष्टि से असफल रहते हुए भी ये सब कार्य सफल हैं। यजमान का सौभाग्य इसी में है कि उसने यज्ञ किया है। इस सौभाग्य को संसार की कोई विपत्ति उससे नहीं छीन सकती। उसका सुकृत अपना फल है।

रमणीय–यज्ञमय क्रीड़ा के काम आनेवाला–धन भी यज्ञ ही के द्वारा प्राप्त होता है। अग्नि लीला–प्रिय देवता है। यह सब प्रकार की सम्पत्तियों से फाग खेलता है। ऐसे ही यजमान। शतहस्तः समाहर सहस्रहस्तः सकिर–सैकड़ों हाथों से कमाता है और हजारों हाथों से बिखेरता है, लुटाता है। यज्ञ के द्वारा कमाया गया धन ही यज्ञ की आहुति बन सकता है। यदि कमाते समय निर्ममता की वृत्ति बनी रहे तो व्यय करते हुए भी मोह तथा ममता की वृत्ति जाग्रत नहीं होगी। धन चीज ही यज्ञ की है। अग्निदेव ही उसका देनेवाला है और अग्निदेव ही उसका लेने वाला। हम तो इन दो क्रियाओं के बीच ही के समय के उसके

अनुशीलन सामवेद : आग्नेय पर्व

त्वदीयं वस्तु गोविन्द

–लेखकः पं० चमूपति

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्।।६।।६०

ऋषिः–उत्कीत्येः–अत्यन्त स्तुत्य।

(अयम्) यही (अग्निः) अग्नि–देव (सुवीर्य य) उत्तम वीर्य का–(सौभगस्य) मंगलमय ऐश्वर्य का (ईशे हि) निश्चित राजा है। (रायः) रमणीय धन का (स्वपत्यस्य) पुत्ररत्न का (गोमतः) वेदवाणी के धनी के (वृत्रहथानाम्) पाप–विनाश के प्रयत्नों का (ईशे) वरदाता यही है।

अमानतदार हैं।

यही अवस्था सन्तान की है। गर्भाधान एक संस्कार है–वेदोक्त यज्ञ है। उसमें वीर्य की शोणित में आहुति दी जाती है। उसका निमित्त है सन्तान उत्पत्ति। वास्तव में संतान नाम ही कुल के शुभसंकल्पों की सन्तति का है। विकासवादियों का कहना है कि जो जीवन रक्षक गुण एक पीढ़ी में पैदा हो जाएं वे आने वाली पीढ़ियों में संक्रान्त होते रहते हैं। गार्हपत्य अग्नि कुल–क्रम से आ रहे व्रतों ही का उपलक्षण है। इस अग्नि को प्रदीप्त रखने के उद्देश्य ही से विवाह किया जाता है। गर्भाधान इसी आग में आहुति देना है। सन्तान को अपत्य अथवा नपात इसीलिए कहा गया है कि वह वंश की अवचनीय विमलता को गिरने नहीं देता, बनाए रखता है, नहीं! उसे और विकसित करता है। उत्तम संतान भोग–विलास का नहीं, यज्ञ ही का परिणाम हो सकती है। ऐसी संतान फिर भेंट भी यज्ञ ही की होगी। गुरु गोविन्द सिंह का यह दोहा अपने पुत्रों में बलि–भावना का अमर दृष्टान्त है–

धर्म–काज के कारणे, वार दिये सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ, जीते चार हजार।।

धन की तरह सन्तान लेने–देने वाला भी वही सकल यज्ञों का अग्रणी अग्नि–देव प्रभु ही है।

कोई शुभ काम करने लगो, उसमें विघ्न–बाधाएँ उपस्थित हो ही जाती हैं। यज्ञ का रास्ता हमेशा राक्षसों ने रोके रखा है। इन्द्र और वृत्र की लड़ाई सनातन है। संसार में सुरासुर संग्राम चलता ही रहता है। तुम लाख अपने 'सुवीर्य का', सौभाग्य का, धनधान्य का, पुत्ररत्नों का मालिक अग्निदेव को बनाए रखो, आत्मोत्सर्ग का, बलिदान का अवसर उपस्थित होने पर कोई हिचकिचाहट, कोई संकोच, कोई बाह्य अथवा आंतरिक विघ्न–बाधा आ उपस्थित होगी। वृत्र कभी स्वार्थ का रूप धारण कर यजमान के अन्तःकरण को आवृत कर लेता है, कभी भौतिक विपत्तियों का बाना पहन बाहर का कण्टक बन जाता है। ऐसे समय वेद–रूपी कामधेनु का दूध पिया काम आता है। वेद–पाठी विपत्ति के आगे घबराता नहीं। एक साथ अपने आन्तरिक शत्रुओं से भी लड़ता है, बाहर के वैरियों से भी। इस दोतरफी आग से उसकी रक्षा यज्ञाग्नि ही कर सकती है। अपनी यज्ञ की भावना को वह और तीव्र कर लेता है। वह घृत तथा शाकल्य की–आन्तरिक स्नेह तथा बाह्य सम्पत्ति की–एक साथ आहुति देता है। प्रत्येक आहुति पर 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण कर कहता है–इदमग्नये इदन्न मम, यह आहुति अग्नि ही के अर्पण है, मुझ यजमान का

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

शांतिप्रवाह
सितम्बर २००६
(पुनर्प्रकाशन)

आतंकवाद का प्रत्यक्ष युद्ध

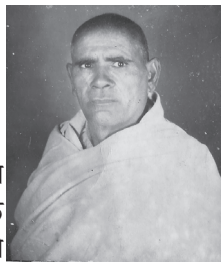

❐स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य संस्थापक शांतिधर्मी

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतवर्ष के महामहिम राष्ट्रपति डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम ने आतंकवाद की ज्वलंत समस्या के संबंध में अपने स्पष्ट और मार्गदर्शक विचार प्रकट किए हैं। आतंकवाद आज किसी एक प्रांत, जाति, धर्म या मत मजहब की समस्या नहीं रहा है, आतंकवाद आज एक वैश्विक समस्या बन चुका है। विश्व समुदाय इसके निरोध के लिए अपने अपने स्तर पर गंभीर प्रयास करता नजर आ रहा है। इसकी कार्यप्रणाली और तानाबाना इतना दृढ़ हो चुका है कि विश्व का शायद ही कोई कोना हो जहाँ आतंकवाद के सूत्र और प्रभाव न हों। पिछले दिनों मुम्बई में हुए बम धमाकों और इंग्लैंड में विमानों को उड़ाने के षड्यंत्र-- इन घटनाओं के सूत्र एक ही स्थान पर जाकर जुड़ते हैं। इन सब घटनाओं में पाकिस्तान के नागरिक या एक ही मत विशेष के लोग संलिप्त पाए जाते हैं। इन घटनाओं के सूत्रों से यह भी पता चलता है कि आतंकवाद अब अलग-अलग मारधाड़ करने वाले छोटे मोटे गिरोहों का कार्य नहीं रह गया है अपितु यह एक विश्वस्तरीय संगठन के निर्देशन में काम करता है। विश्व परिदृश्य की अपेक्षा भारत के लिए आतंकवाद बड़ी चुनौती है। अमरीका और ब्रिटेन की अपेक्षा भारत में उस समुदाय विशेष से जुड़े लोग अधिक संख्या में निवास करते हैं, जो प्राय: आतंकवाद से जुड़े पाए जाते हैं और उनमें से बहुत से देशभक्त भी हैं। इसलिए उनको चिह्नित करने में और भी ज्यादा चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती तो यह है कि आतंकवाद की गंभीरता का सही आकलन नहीं किया जा रहा है, और इसे कुछ असंतुष्ट लोगों की गतिविधियाँ मात्र समझा जा रहा है। यह हमारे देश में ही हो सकता है, कि किसान मजदूरों के हकों की आवाज उठाने वालों पर देशद्रोह के मुकदमें चलें और निर्दोष लोगों की हत्या कर देश तोड़ने का षड़यंत्र करने वालों को पांच सितारा होटलों में मुर्गमुसल्लम की पार्टियाँ देकर गोलमेज बातचीत के लिए बुलाया जाए।

राष्ट्रपति ने कहा कि आतंकवाद के खतरों को समझा जाए। आतंकवाद का सुनियोजित होना आज सबसे बड़ा खतरा है। आतंकवाद सुनियोजित है, यही सबसे बड़ा खतरा है। इसको किस किस का समर्थन प्राप्त है, यह भी गंभीर विषय है। यदि कुछ भूले भटके लोग इस प्रकार की गतिविधियों में संलिप्त हैं तो जो जो भूले भटके नहीं हैं वे उनकी गतिविधियों को निंदित क्यों नहीं ठहराते। इससें अनुमान लगाना चाहिए कि आतंकवाद का उद्गम कहाँ है? सभी धर्मों को समान मानने वाले मासूम बुद्धिजीवियों को देखना चाहिए कि कौन से धर्मग्रंथ, उस मत विशेष को न मानने वाले लोगों की हत्या को औचित्य प्रदान करते हैं। नेता लोग कोई आतंकवादी घटना होने पर जिसमें एक ही समुदाय के सैंकड़ों लोगों की जानें चली जाती हैं, सांप्रदायिक सौहार्द और शांति बनाए रखने की अपील करते हैं। उन्हें लगता है कि इन घटनाओं से सांप्रदायिक तनाव फैल सकता है। वे अपनी निर्दोष जनता की रक्षा का उपाय क्यों नहीं करते? इससे बड़ी बेशर्मी और क्या हो सकती है कि एक राष्ट्रीय स्तर के संगठन के मुख्यालय पर हुए हमले के बाद एक नेता का बयान आया कि यह हमला स्वयं उसी संगठन ने कराया है। मुम्बई बम विस्फोट के लिए शिवसेना को दोष देने वाले नेता को संभवत: अलकायदा को महात्मा बुद्ध का अहिंसावादी अनुयायी सिद्ध करने का यही मौका मिला है।

अमरीका और भारत के आतंकवाद के संदर्भ अपने अपने हैं लेकिन आतंकवाद के सर्वोच्च संगठन की दृष्टि में यह एक ही है। उनके लिए प्रत्येक काफिर शत्रु है। अमरीका के लोग अपने देश पर आक्रमण के बाद एकजुट हो गए और हमारे देश के लोग आतंकवाद के युद्ध के समय अपने अपने राजनैतिक स्वार्थों पर दृष्टि गढ़ाए हैं। बल्कि बहुत से तो आतंकवाद की जड़ों को ही जानबूझकर पल्लवित कर रहे हैं। कभी वे सिमी जैसे प्रतिबंधित संगठन को पाक पवित्र होने का प्रमाणपत्र देते दिखाई देते हैं और कभी पाकिस्तान के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने की वकालत करते हैं।

राष्ट्रपति के ये शब्द जो अखबार में छपे, मुझे बड़े मार्मिक लगे- 'जब दुष्ट लोग एकजुट हो रहे हैं तो अच्छे लोगों को उनसे निपटने के लिए एक साथ आना जरूरी है।' उन्होंने कहा कि यह एक राष्ट्रीय चिन्ता का मसला है और सभी लोगों को व्यक्तिगत वैचारिक मतभेद भुलाकर एकता की भावना के साथ इससे निपटना होगा। राष्ट्रपति ने इसे एक परोक्ष युद्ध माना है और इससे निपटने के लिए एक राष्ट्रीय अभियान चलाने का आह्वान किया है। अच्छे लोगों के संगठन के बिना ही दुष्ट लोग पनपते हैं। आज इस राष्ट्रीय चुनौती के समय में केवल अच्छा होना ही काफी नहीं है बल्कि शक्तिशाली और संगठित होना भी आवश्यक है। इस युद्ध में सभी भारतवासियों का और सरकार का एक ही कार्य सूत्र होना चाहिए- निर्दोष जनता और भारत की संप्रभुता की रक्षा, देशभक्तों को सम्मान और गद्दारों को दण्ड।

दुल्हन कहाँ से लाओगी मां

दुल्हन कहाँ से लाओगी मां, डोली किसे बिठाओगी मां!
दुनिया में आने से पहले जब बिटिया मरवाओगी मां।।

यूँ तो अब वजूद, मेरा नहीं इस जहान में।
मैं हारी, तुम जीती बेशक, पाप के मैदान में।
नहीं था रिवाज मां ये अपने खानदान में।
चक्कर में पड़ जाओगी मां, जब फिर जांच कराओगी मां।
देख पुत्र की जगह दोबारा, नहीं मुझे अपनाओगी मां।१

भूलवश एक रोज मां, मैं तेरे घर ही आऊंगी।
रूखा सूखा बासी जो भी दोगी उसे खाऊँगी।
आन बान और शान कुल की, मर्यादा निभाऊँगी।
बाकी जो बताओगी मां, करूंगी जो चाहोगी मां।
चलूँगी भी उस पर मुझको, जैसी राह दिखाओगी मां।२

सोच कर दुखी हूँ एक दिन, वह भी वक्त आयेगा।
आपके इस घर में मेरा साथ बिछुड़ जायेगा।
और वतन वापसी में भैया मजबूरी जतायेगा।
सुनकर सहम जाओगी मां, भूलों पर पछताओगी मां।
घडियां अभिशाप की वे, कष्टों में बिताओगी मां।३

निश्चित ही चिकित्सक जग में दूसरा भगवान है।
मारे ना, कर जांच कहे, इसमें बिटिया की जान है।
और समझाये बिटिया से कोख, कोख से जहान है।
वापिस लौट जाओगी मां, दुनिया हमें दिखाओगी मां।
बेटे के समान बेटी, मुहिम एक चलाओगी मां।–४

हत्या के अभियोग में जब फांसी का विधान है।
फिर कोख कातिलों को क्यों ना मौत प्रावधान है।
संशोधन भी कर दो, गर कहीं अड़चन संविधान है।
यह मुद्दा गरमाओगी मां, संसद को जगाओगी मां।
के सी गर्ग 'निर्भय' निश्चित बेटियां बचाओगी मां।५

रचना–के सी गर्ग 'निर्भय' मोदीनगर ९२८६२१४६६५
प्रस्तुति–देवेन्द्र आर्य एडवोकेट बागपत मो ९४१२१००९६७

वसन्त

स्वप्न से किसने जगाया?
मैं सुरभि हूँ।

छोड़ कोमल फूल का घर
ढूँढती हूं कुंज निर्झर।
पूछती हूँ नभ धरा से-
क्या नहीं ऋतुराज आया?

मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत
मैं अग-जग का प्यारा वसंत।

मेरी पगध्वनि सुन जग जागा
कण-कण ने छवि मधुरस माँगा।

नव जीवन का संगीत बहा
पुलकों से भर आया दिगंत।

मेरी स्वप्नों की निधि अनंत
मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत।

रमेश सिंगला
२८१/५ गांधी नगर
जींद–१२६१०२

कथनी करनी

सदा कहा मंचों पर उसने, कि लहू सभी का एक समान ,
अपनों सम्मुख मेरे लहू को, गैर बता कर जला डाला।
असली चेहरे पर पहन मुखौटा, हमदर्दी की बातें की,
परंतु सीने में तीक्ष्ण–तीखे तीर चुभा कर जला डाला ।
बेखौफ होकर जिसके सिजदे, मैं सदा करता रहा,
बनकर के शैतान उसी ने, गले लगाकर जला डाला।
गिरजा, गुरुघर, मंदिर, मस्जिद सब अपने–से लगते थे ,
मजहब अलग है तेरा–मेरा, याद दिला कर जला डाला।
जिन चिरागों के कारण घर में, खूब उजाला था 'खटकड़',
उन्हीं चिरागों ने ही घर को, आग लगाकर जला डाला।।

–प्रा० रामफल खटकड़, ग्रा० पो० खटकड़, जींद

शांति मिले तो कैसे

–डॉ० स्वर्ण किरण सोहसराय (नालंदा)–८०३११८

जल रही है सायँ–सायँ आग, शांति मिले तो कैसे,
धोये धुल नहीं पाता दाग, शांति मिले तो कैसे?
स्वार्थ की आंधी, रोके रुक नहीं पाती,
भौंचक है उड़ता हुआ काग, शांति मिले तो कैसे?
देश व्यक्ति से छोटा, व्यक्ति बड़ा कैसे,
भीतर का गायब अनुराग, शांति मिले तो कैसे?
जहन्नुम के रास्ते की ओर बढ़ना मुश्किल कहाँ,
भाग्य क्या अलग बेलाग, शांति मिले तो कैसे?
चालबाजी, काइयांपन, दोस्ती का नाटक करना–
असमय में खेलना फाग, शांति मिले तो कैसे?

हमारा धर्म हमारा राष्ट्र और युवक

❑**प्राचार्य पृथ्वीसिंह सहरावत** (सेनि) नाथवास वाले, भिवानी (9255971426)

हमारा भारत आध्यात्मिक संस्कृति वाला देश है। धर्म यहां का आधार है। आज भारत का संसार में जो गौरव है, वह केवल इसलिए कि यहाँ की संस्कृति, दर्शन, परम्परा, अहिंसा, मैत्री-भाव विश्व को प्रेरणा देते हैं। परन्तु आज जब मैं भारतीयों की व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की झलक देख पाता हूँ तो हर्ष की अपेक्षा अत्यंत दु:ख होता है। उनके जीवन में इतनी अधिक गिरावट और ओछापन आ गया है कि वे अपने छोटे से स्वार्थ के वास्ते दूसरों को हानि पहुँचाने में जरा-सा भी संकोच नहीं करते। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपना विकृत रूप देखें और हिम्मत के सहारे बुराइयों को छोड़कर उत्तम मार्ग अपनाएं। तभी हम सही अर्थों में श्रेष्ठ भारतीय कहलाएंगे। हम विकारों के दलदल से निकल कर सत्य, संतोष और सद्भाव के उपवन में चलेंगे तो यकीनन सच्चे मानव एवं देशप्रेमी होने का गौरव प्राप्त कर लेंगे। हमारा धर्म 'सत्यस्वरूप' है, जिसे कोई जाति, सम्प्रदाय बाधा नहीं पहुँचा सकता। सभी जातियां इसका परिपालन करती हैं।

विद्या का अभिप्राय यह नहीं है कि विद्यार्थी रट-रटा कर केवल पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करके अपना और अपने परिवार का पेट भरने के योग्य बन जाए। उसका उद्देश्य बहुत बड़ा है और वह है-जीवन को समझना, यथार्थ को जानना, विद्या को पाने की योग्यता प्राप्त करना।

धर्म हमें खाना-पीना, चलना-फिरना, उठना-बैठना व संयम का पाठ पढ़ाता है। हम सभी सुखी जीवन चाहते हैं। इसके लिये धर्म हमें सिखलाता है कि हम स्वार्थी न बनें। अपनी सुख-सुविधा के लिए दूसरों का गला न घोटें। हम यह न भूलें कि दूसरा भी तो सुख की चाह मन में रखता है। यदि दोनों में शत्रुता हो गई तो क्या परिणाम होगा, इसके बारे में जरा सोचें। लूट-खसोट का जीवन भी कोई जीवन है! धर्म तो चरित्र निर्माण, जीवन-शुद्धि, मानवता का पक्षधर है। आप लोग अखबारों में पढ़ते हैं। कितनी उग्रता और उद्दण्डता देखने में आ रही है। धर्म हमें आत्म-दुर्बलता से निकाल कर, अनुशासन और आत्म-श्रद्धा का भान कराता है।

सम्प्रदाय या मत मतान्तरों को धर्म समझ लेना भारी भूल है। यदि हम प्राचीन इतिहास पढ़ेंगे तो पाएंगे कि संप्रदायवाद के कारण न जाने कितना खून-खराबा हुआ, जिसकी कालिमा कभी धुल नहीं सकती। यह विष कैसा है? किस कारण फैला? इसका सीधा-सा जवाब है कि जब व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि में लग जाता है, यश-लोलुपता, प्रतिष्ठा के नशे में पागल हो जाता है तब उसका विवेक काम नहीं करता, इस कारण यत्र-तत्र झगड़े, जय-पराजय की लड़ाई आरम्भ हो जाती है। ऐसा करने वाले धर्म की आत्मा को नहीं पहचानते हैं। मुझे आशा है कि जब लोग ध र्म को जान लेंगे और उसको अपने आचरण में ले आएँगे तो स्वत: ही सब संकीर्ण मानसिकता और कटुता को छोड़ कर, अपना जीवन समता, मैत्री और बंधुत्व के मार्ग पर ले चलेंगे।

विद्यार्थी जीवन मनुष्य का महत्त्वपूर्ण अध्याय है। यह ऐसा समय है जिसमें व्यक्ति के भावी जीवन की नींव रखी जाती है। इस समय में मनुष्य अपने में सद्गुणों का विकास कर पाता है, मानवता सीखता है। सत्य, सदाचार, विनम्रता, सरलता, मित्रता, बंधुता जैसे जीवन उपयोगी गुणों को अपने जीवन में भरता है। विद्या का अभिप्राय यह नहीं है कि विद्यार्थी रट-रटा कर केवल पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करके अपना और अपने परिवार का पेट भरने के योग्य बन जाए। उसका उद्देश्य बहुत बड़ा है और वह है-जीवन को समझना, यथार्थ को जानना, विद्या को पाने की योग्यता प्राप्त करना। परन्तु आज उसका स्तर बिल्कुल गिर गया है। अत: मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि शिक्षा का लक्ष्य आप न गिरने दें, पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त सद्विवेक को अर्जित करके अनुशासन, नम्रता, सद्व्यवहार, संयम आदि गुण जो विद्यार्थी जीवन के कीमती आभूषण हैं, इन्हें प्राप्त करके अपना व्यक्तित्व निखारें। विद्यार्थी किसी भी प्रकार की तोड़-फोड़, हिंसा वाले कार्यों से बचकर रहें। किसी राजनैतिक दल के बहकावे में आकर अपनी शक्ति और समय को बर्बाद न करें। विद्यार्थी आजादी की लड़ाई का इतिहास पढ़ें। भारतभूमि, जो वीरों की भूमि मानी जाती है, उसका इतिहास पढ़ें। देश ने न जाने कितनों का उत्थान-पतन देखा। कितने

ही शूरवीरों के पराक्रम और वीरता की गाथाएँ जानने को मिलेंगीं। देश-भक्त जो देश के लिए मर-मिटे, अनेकों को कारावास की यातनाएं सहन करनी पड़ीं। बहुत समय बीत गया, अच्छा बुरा करने वाले जो थे, वे अब इस संसार में नहीं रहे परन्तु उनकी भलाई-बुराई का वर्णन इतिहास के पन्नों में दर्ज है, जिससे व्यक्ति को आगे बढ़ने की शिक्षा मिलती रहती है।

हम संसार में आते हैं और अपना कार्य करके इस नश्वर संसार से विदा हो जाते हैं। सचमुच मानव का जीवन कितना अस्थिर है पर मानव इसे समझ नहीं पाता। व्यक्ति अपने-आप को अमर मानते हुए लोभ, लालच और स्वार्थ के कीचड़ में इस कदर धंस जाता है कि जीवन के वास्तविक सत्य को पहचान नहीं सकता, यही हमारी सब की सबसे बड़ी भूल होती है। विद्यार्थी को अपने जीवन का प्रत्येक पल सत्य, सदाचार, शीलता, मित्रता, सद्विचार, संयम, समता आदि सद्वृत्तियों में लगाना होगा। तभी उसका जीवन सफल माना जाएगा। ऐसे ही मार्ग पर डटे रहने को मैं उसकी 'सच्ची शूरवीरता' मानता हूँ। अनाज, पानी, वायु ये जीवन के लिए आवश्यक तत्व हैं, यह बात सभी स्वीकार करते हैं परन्तु मेरा मानना है कि जितनी अन्न-जल-वायु की आवश्यकता जीवन को होती है, उससे भी अधिक आवश्यकता चरित्र, सदाचार और मानवता की भी होती है। यदि विद्यार्थी उक्त गुणों से विपन्न, दीन-हीन है तो वह कैसा विद्यार्थी? वह कैसा मानव? सत्य में तो वह नाम-मात्र का, केवल कहने के लिए मानव है। वास्तव में वह विद्यार्थी या मानव कहलाने का अधिकारी ही नहीं होता है। मेरी यह प्रबल इच्छा रही है कि प्रत्येक विद्यार्थी श्रेष्ठ गुणों को धारण करके सच्चा मानव बन कर शिक्षकों, सन्तों, माता-पिता द्वारा बताए गए सन्मार्ग पर चलेगा तो उसका जीवन फूलों की तरह महक उठेगा।

विद्यार्थी काल हम सबके जीवन का सुनहरी समय होता है। इस बहुमूल्य समय का जितनी सजगता से छात्र-छात्राएं उपयोग कर सकेंगे, उतना ही आपका जीवन अधिकाधिक उन्नत और स्वस्थ बनेगा। विद्यार्थी जीवन का हर पल सद्गुणों को संचित करते रहने में ही बीतना चाहिए क्योंकि संचित गुणों की नींव इतनी मजबूत होती है, जिस पर श्रेष्ठ जीवन का आलीशान एवं वैभवशाली महल खड़ा हो सकता है। विद्यार्थी अनुशासन का पालन करते हुए आत्म विजेता तथा चरित्रवान बने। आप बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़ लेवें, बड़ी से बड़ी योग्यता एवं उपाधियां भी प्राप्त कर लेवें, परन्तु यदि चरित्र गया तो समझो सब कुछ गया। तब पुस्तकों का ज्ञान बैल की पीठ पर लदे उन पुस्तकों के बोरों जैसा है, जिनका उसके लिए कोई महत्व ही नहीं है। विद्यार्थियों को मेरी बात कड़वी जरूर लगेगी परन्तु है बिल्कुल यथार्थ। विद्यार्थी को हर पल सजग रहना चाहिए, कहीं चरित्र हीनता के विषैले कीटाणु हमारे जीवन में चुपचाप प्रवेश तो नहीं कर रहे। सजगता केवल विद्यार्थी के लिए ही हितकर नहीं है, यह गुण तो सभी के लिए आवश्यक है। सजगता हमारे लिए वरदान सिद्ध होती है। जैसे बार्डर पर सिपाही बड़ी तत्परता एवं सजगता से दिन-रात पहरा देता है, थोड़ी सी चूक उसके जीवन के लिए, देश के लिए अहितकर होती है। वैसे ही विद्यार्थी जीवन में उसकी सजगता स्वस्थ समाज और उन्नत राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है।

विद्यार्थियों को यह समझ लेना चाहिए कि मर्यादित जीवन वास्तव में नवनीत के समान है। जिस छात्र-छात्रा के जीवन में मर्यादा के प्रति आकर्षण नहीं, वह जीवन अच्छा नहीं कहलाता। जिस प्रकार पानी नदी के दो पाटों के बीच बंधा, मर्यादा में रहकर बहता है तो वह जन-जन के लिए कितना उपयोगी है। इसके विपरीत यदि पानी नदी के किनारों को तोड़ कर बहने लगे, अपनी मर्यादा भंग कर देवे तो वह दूसरों के लिए बहुत हानिकारक एवं घातक सिद्ध होता है। अतः विद्यार्थी को सदाचारी से मित्रता का संबंध रखना चाहिए।

> सम्प्रदाय या मत मतान्तरों को धर्म समझ लेना भारी भूल है। यदि हम प्राचीन इतिहास पढ़ेंगे तो पाएंगे कि संप्रदायवाद के कारण न जाने कितना खून-खराबा हुआ, जिसकी कालिमा कभी धुल नहीं सकती।

आचारहीन चाहे कितने बड़े पद पर विराजमान हो अथवा चाहे कितना बड़ा पण्डित ही क्यों न होवे, हमारा उसके साथ कोई संबंध या रिश्ता नहीं होना चाहिए। आचारवान विद्यार्थी चाहे थोड़े ही क्यों ना होवें, उनमें अनन्त शक्ति एवं आकर्षण होता है। आचारहीन एवं पथ-भ्रष्टों की संख्या अधिक होने पर भी शून्य प्रभाव वाले होते हैं, वे न तो स्वयं का भला कर सकते हैं और न ही दूसरों का भला सोच सकते हैं। आप सब यह जान लेवें कि संत, महापुरुष इस धरती पर कभी-कभार, यदा -कदा जन्म लेते हैं। उनके केवल यशगान करने से काम बनने वाला नहीं है। गौरव की बात तब होगी, जब हम उनके जीवन चरित्र से शिक्षा ग्रहण करके, उनसे प्रेरणा लेकर उनके जैसा

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

उन्नति की सीढ़ी है जिज्ञासा

❑रामफलसिंह आर्य, (9418277714)
C-18, तृतीय तल, आनन्द विहार,
उत्तम नगर नई दिल्ली-59

अपने जीवन का उचित प्रकार से निर्वाह करने के लिए ईश्वर ने सभी प्राणियों को बुद्धि या ज्ञान प्रदान किया है। पशु-पक्षियों में यह ज्ञान स्वाभाविक ज्ञान के रूप में है और मनुष्य में नैमित्तिक ज्ञान के रूप में। स्वाभाविक ज्ञान का अर्थ है कि किसी अन्य साधन की आवश्यकता न होते हुए वे स्वत: ही उन कार्यों को करने की क्षमता रखते हैं जो उनके लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के रूप में आप गाय आदि पशुओं को ले लीजिए। जब इसके बच्चे कुछ चलने के योग्य हो जाते हैं तो जल में प्रवेश करने पर भी वे डूबते नहीं हैं, अपितु तैरने लग जाते हैं। उन्हें यह करना किसने सिखाया? उत्तर है- किसी ने भी नहीं। फिर कैसे सीखा? उत्तर है कि उनका यह ज्ञान स्वाभाविक है। अन्य भी बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं- वर्षा आने से पूर्व चीटियां अपना भोजन एकत्र करके बिलों में प्रवेश कर जाती हैं। पक्षियों के बच्चों को उड़ना कौन सिखाता है? उन्हें भी स्वाभाविक ज्ञान ईश्वर ने दिया है। मनुष्यों के साथ ऐसा नहीं है। उन्हें सब कुछ सीखना पड़ता है। इसके लिए किसी शिक्षक की आवश्यकता रहती है। कोई शिक्षक होगा तो वह सीख सकेगा, अन्यथा नहीं। इसी को निमित्त कहते हैं। जो निमित्त से प्राप्त होता है वही नैमित्तिक ज्ञान कहलाता है। निमित्त का अर्थ है- साधन। शिक्षक, शिक्षा का साधन, शिक्षा का ढंग- ये सब निमित्त ही कहलाएंगे।

अब विचार करना चाहिए कि स्वाभाविक ज्ञान बड़ा है या नैमित्तिक ज्ञान। सीधा सा उत्तर है- नैमित्तिक ज्ञान बड़ा है। कैसे? इसलिए, कि इस ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। यह कहीं तक भी बढ़ाया जा सकता है। स्वाभाविक ज्ञान की अपनी सीमा है। किसी निमित्त के द्वारा उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन किसी एक दिशा विशेष में अवश्य किया जा सकता है, परंतु उसे उत्थान या सुधार के स्तर तक नहीं ले जाया जा सकता। जबकि नैमित्तिक ज्ञान के चमत्कार हम प्रतिदिन संसार में देखा करते हैं। संसार में मनुष्यों के जीवन, रहन-सहन में जो-जो परिवर्तन हो चुके हैं- अथवा आगे होंगे-यह सब इस नैमित्तिक ज्ञान का ही परिणाम है।

नैमित्तिक ज्ञान का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अति आवश्यक अंग है-जिज्ञासा अर्थात् जानने की प्रबल इच्छा। शिक्षक भी है, शिक्षा का साधन भी है, अवसर भी है परंतु शिष्य में जिज्ञासा नहीं है तो ऐसी स्थिति में शिक्षा अधूरी ही रह जाएगी या यह भी संभव है कि हो ही न सके। जिज्ञासा का होना परम आवश्यक है। यह जिज्ञासा ही है जो सृष्टि की नाना जटिल समस्याओं का हल ढूंढने में, उन रहस्यों को खोलने में मनुष्य को उच्च से उच्चतर स्तर की ओर लेकर जाती है। यह जिज्ञासा ईश्वर की ओर से ही मनुष्य को प्रदान की गई है। यह ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा उसके उपयोग की जननी है। स्वयं इस प्रकृति में इतना ज्ञान-विज्ञान निहित है कि अरबों वर्ष तक उसमें अपने को खपा डालें तो भी पार न पा सकें। यह धरा- जो कि हमारा आश्रय स्थल है- इसमें क्या-क्या रत्न, धातु, खनिज पदार्थ भरे पड़े हैं। कैसे-कैसे वृक्ष, लता, औषधियाँ, फल-फूल, खाद्य पदार्थ इसमें हैं! उनका कहां-कहां पर कैसा-कैसा प्रयोग किया जा सकता है? एक पदार्थ दूसरे के साथ मिलकर क्या-क्या गुण अपना लेता है? कौन सा विष है, कौन सा अमृत है? कब-कब, कैसी परिस्थिति में विष से भी अमृत का कार्य लिया जा सकता ह? यहां तक कि एक व्यर्थ समझा जाने वाला घास का तिनका भी किस औषध के साथ संयोग किए जाने पर क्या प्रभाव दिखा सकता है, क्या ये सब जानने की बातें हैं या नहीं? अवश्य ही हैं। गुरुत्वाकर्षण शक्ति क्या है? समुद्र के जल का क्या अर्थ है? वर्षा कैसे जिज्ञासा करने का उपदेश स्वयं ईश्वर दे रहे हैं। जैसा कि यह इच्छा तो मानव को आदि से ही प्राप्त हुई है। यदि यह न होती तो ज्ञान का विकास ही न हो सकता था।

होती है, कैसे-कैसे हो सकती है? अनेकानेक आकाशीय पिंड क्या हैं? विद्युत क्या है, उसका कितना व्यापक प्रभाव है और कहां-कहां पर है? जल के क्या गुण हैं? वायु से क्या-क्या किया जा सकता है? सूर्य के प्रकाश से क्या कुछ लाभ लिया जा सकता है? अग्नि से क्या-क्या सिद्ध किया जा सकता है? विभिन्न प्रकार के भौतिक पदार्थों से क्या-क्या लाभ लिया जा सकता है? क्या यह सब कुछ मनुष्य को नहीं जानना चाहिए? उत्तर होगा कि अवश्य जानना चाहिए।

याद रखिए कि जिज्ञासा जितनी प्रबल होगी- विद्या या ज्ञान उतना ही कल्याणकारी सिद्ध होगा। जिज्ञासु उतना ही ऊँचा उठ जाएगा। मनुष्य के लिए दोनों प्रकार का ज्ञान आवश्यक है- ईश्वर तथा आत्मा से संबंधित और भौतिक पदार्थों से संबंधित। आर्यसमाज का पहला नियम ही इस बात को दर्शा रहा है- 'सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।' ईश्वर तो सब विद्याओं का मूल है ही, परंतु बिना जिज्ञासा के मनुष्य उसे प्राप्त नहीं कर सकता।

जीवन का अंत हो जाता है, किंतु विद्या का अंत नहीं होता। महर्षि भरद्वाज जब परम वृद्ध हो गए। इंद्र ने आकर कहा ऋषिवर, यदि मैं आपको एक शतायु और दे दूँ तो आप क्या करेंगे? भरद्वाज ने कहा कि विद्या ही खोजता रहूंगा। इंद्र वर देकर चले गए और वे पुनः विद्या के अन्वेषण में लग गए। इन्द्र इसी प्रकार से भरद्वाज को तीन शतायु और भी देकर गए, वे विद्या ही खोजते रहे। अंत में आकर इंद्र ने कहा- 'अनंता वै वेदाः' वेद अर्थात् विद्याएँ तो अनंत हैं। आप कहां तक ढूंढेंगे! आपका जीवन बहुत ही प्रशंसनीय बीता है। अब मुक्तिधाम चलिये। यह एक आलंकारिक कथा है, जिसमें विद्या प्राप्ति के लिये ऋषियों के परिश्रम को दिखलाया गया है। आईए, अब तनिक वेदों की ओर चलते हैं। वेदों में अनेक स्थानों पर प्रश्न उत्तर के माध्यम से वर्णन आया है। प्रश्न जिज्ञासापूर्वक किए जा रहे हैं और उत्तर समाधान के रूप में हैं।

यत्पुरुषं व्यदधु कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।। यजु० ३१/१०

जिस पूर्ण परमात्मा को विद्वान् पुरुष विविध प्रकारों से धारण करते हैं, उसकी कितने प्रकार से कल्पना करते हैं? इसका मुख क्या है? भुजाएं क्या हैं? उदर क्या है और पैर क्या कहलाते हैं? अगले ही मंत्र में इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत।। यजु० ३१/११

अर्थात् मानव समाज में ब्राह्मण ईश्वर के मुख के समान हैं। क्षत्रिय भुजाओं के समान हैं। वैश्य पेट के समान हैं और शूद्र पैरों के समान हैं। और देखिये-

कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः।
किं स्विद्धिमस्य भेषजं किम्वा वपनं महत्।। यजु० २३/४५

अर्थात् हे विद्वान्! इस संसार में कौन अकेला चलता है या प्राप्त होता है, और कौन फिर-फिर उत्पन्न होता है? कौन शीत का औषध है और क्या अच्छे प्रकार से बीज बोने का आधार है? उत्तर अगले ही मंत्र में दिया गया है-

सूर्य्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्।। ४६

इसी प्रकार-

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आसयतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्।।
ऋ० १०/८१/४

दृष्टा ऋषि इस ऋचा के द्वारा तर्क करते हैं कि वह कौन सा वन है? वह कौन वृक्ष है, जिस वन और वृक्ष से विश्वकर्मा ने द्युलोक और पृथिवी को काटकर अलंकृत किया है? हे मनीषी विद्वानो! मन में पर्यालोचना करके उनको भी पूछिए। संपूर्ण भुवनों को पकड़े हुए वह किस आधार पर खड़ा रहता है? हे विद्वानो, इस बात को भी तो कभी पूछो।

अस्त होते हुए सूर्य को देखकर कहा गया कि सूर्य कहां चला जाता है? इसकी किरण अब किस लोक को प्रकाशित कर रही होगी!- (ऋ० १/३५/७)

क्वेऽदानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमा द्यां रश्मिरस्या ततान।

मान्य पाठकगण! ये कुछ उदाहरण हमने केवल यह दिखलाने के लिए उपस्थित किए हैं कि जिज्ञासा करने का उपदेश स्वयं ईश्वर दे रहे हैं। जैसा कि यह इच्छा तो मानव को आदि से ही प्राप्त हुई है। यदि यह न होती तो ज्ञान का विकास ही न हो सकता था। किंतु कितने आश्चर्य की बात है कि मानव मन की इस सुंदर और महाकल्याणकारी भावना को स्वार्थी और चालाक लोगों ने ऐसे अंधकूप में ले जाकर स्थापित कर दिया कि इसका स्थान पाखंड, मूर्खता और अज्ञान ने ले लिया।

विचार कीजिये कि मानवता का, ज्ञान का, शक्ति का कैसा अपमान किया गया! स्मरण रखना चाहिए कि यदि एक मनुष्य का वध करना भयानक अपराध है तो मानवता की हत्या करना कितना बड़ा अपराध है! कोई श्रद्धालु भक्त किसी के पास कोई जिज्ञासा लेकर जाता है और जिसके पास गया वह उसे उल्टे मार्ग पर ले जाकर बहकाने लग जाए-कुछ ऐसा सिखाने लग जाए जो जिज्ञासु की उन्नति के स्थान पर

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

कैसा हो पति पत्नी का सम्बंध

❒स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

पति पत्नी में आपस में संवेदनशीलता होनी चाहिए। एक दूसरे की संवेदनाओं को पति-पत्नी दोनों समझ सकें। पति की क्या भावनाएं हैं, पत्नी उनको इशारे में समझ ले। पत्नी की क्या भावनाएं हैं, पति उनको इशारे में ही समझ ले। आपस में ऐसा समन्वय, बुद्धिमत्ता, समझदारी, संवेदनशीलता हो तो गृहस्थ बहुत अच्छा चलेगा। दोनों एक दूसरे की भावनाओं का आदर करें और एक दूसरे की बात को पूरा करें।

अगली बात है संकल्प की। पति-पत्नी ने जो दायित्त्व अपने ऊपर लिया है, उसको अच्छी तरह निभाने के लिए संकल्प करें कि हम एक दूसरे को सुख देंगे, दुःख नहीं देंगे। गृहस्थ का उद्देश्य सुख प्राप्ति है। दुःख भोगने के लिए तो कोई व्यक्ति शादी करता नहीं। परंतु लोगों को क्योंकि इन नियमों का पता नहीं और पता भी हो तो लोग पालन नहीं करते। फिर कहते हैं 'साहब गृहस्थ में बड़ा दुःख है।' भाई, दुःख तो आपने स्वयं बना रखा है। गृहस्थ के नियमों को जानो, उनका पालन करो- आपका गृहस्थ जीवन बहुत अच्छा हो जाएगा, सुखी हो जाएगा।

इस तरह से पति-पत्नी संकल्प लेवें कि हम एक दूसरे को अच्छी तरह से सुख देंगे। किसी की उपेक्षा नहीं करेंगे। किसी का अपमान नहीं करेंगे। किसी को नीचा नहीं दिखाएंगे। किसी को अपने से घटिया नहीं समझेंगे। पति-पत्नी दोनों में एक जैसी आत्मा को स्वीकार करेंगे। इस तरह का संकल्प होना चाहिए। तभी गृहस्थ अच्छा चलता है।

जब शादी होती है तो पत्नी यही सोच कर जाती है शादी करके कि मेरा पति मुझे सुख देगा। पति भी यही सोचता है कि -यह मेरी पत्नी है, यह तो मुझे सुख देगी। दोनों सुख चाहते हैं। तो फिर दोनों को एक दूसरे को सुख देना ही चाहिए। ऐसा करेंगे तभी तो सुख मिलेगा। ईश्वर का यह नियम है- जब आप दूसरे को सुख देंगे तो दूसरा आपको सुख देगा। यदि आप दूसरे को दुःख देंगे तो दूसरा आपको दुःख देगा। विवाह के पश्चात् पति पत्नी को ऐसे भावनाओं की दृष्टि से एक दूसरे को बराबर समझ कर चलना चाहिए। सोच यही हो कि मैं भी आत्मा हूं, वह भी आत्मा है। इस तरह दोनों का समान स्तर का मानकर लगने तक जो भी सारा खर्चा है वह। पति इतना कमा सके कि घर के सारे खर्च ठीक-ठीक निकल जाएँ। जो आवश्यक खर्चे हैं वे तो पूरे होने ही चाहिएँ। इसके साथ ही यह भी ध्यान रखें कि बहुत लग्जरी लाइफ भी न जिएँ। जितनी चादर हो, उतना ही पैर फैलाएँ। जितना जीवन चलाने के लिए बेहद आवश्यक है, उतनी सुविधाएं तो पूरी होनी ही चाहिएँ। इस तरह से पति का इतना सामर्थ्य हो कि वह धन-संपत्ति की दृष्टि से कमजोर न हो- तो गृहस्थ अच्छा चलता है।

अब अंतिम बात है **समर्पण** की। एक दूसरे के प्रति पति-पत्नी का समर्पण होना चाहिए। अथवा कभी दूसरे की खातिर एक को अपनी कुछ इच्छाएं छोड़नी पड़ें तो इतना त्याग भी उनमें होना चाहिए कि मेरी पत्नी को थोड़ी कठिनाई है, कष्ट है। मुझे इस समय अपनी इच्छा उसके सुख के लिए छोड़ देनी चाहिए। पति को सोचना चाहिए कि अपने सुख को छोड़कर पत्नी की सेवा करूंगा। ऐसे ही अपने शौक को भी छोड़ना पड़ता है। शादी के बाद अब पति-पत्नी दोनों मिलकर एक हो गए। अर्थात् दोनों का सुख-दुःख एक हो गया। ऐसा नहीं कर सकते कि पत्नी बेचारी बीमार पड़ी है और पति बाहर सैर करना आदि अपने शौक पूरे करता है। इसी तरह पति बीमार हो जाए और पत्नी अपनी पार्टी में जाती रहे, किटी पार्टी में इधर-उधर अपने शौक पूरे करती रहे। गृहस्थ में ऐसा आचरण ठीक नहीं होता। दोनों को एक दूसरे के लिए त्याग करना पड़ता है, परस्पर समर्पित रहना पड़ता है कि मेरी पत्नी का दुःख मेरा दुःख है। पति ऐसा सोचे और पत्नी यह सोचे कि पति का दुःख मेरा दुःख है। जब मेरा पति दुःखी है तो मैं सुखी कैसे रह सकती हूं! पत्नी को ऐसे सोचना चाहिए। पति को भी ऐसे सोचना चाहिए कि मेरी पत्नी दुःखी है तो मैं सुखी कैसे हो सकता हूं? जब तक इसका दुःख दूर न हो जाए तब

तक मुझे भी शांति नहीं है। ऐसे आपस में प्रेम, त्याग और समर्पण की भावना हो तो गृहस्थ जीवन अच्छा होता है। इन सब बातों का यदि ध्यान रखा जाए तो गृहस्थ को हम अच्छा बना सकते हैं। ऐसा बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यही सुखी गृहस्थ की कुंजी है।

पति-पत्नी को-- दोनों को ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे आपस में एक दूसरे को वैसा ही स्वीकार करें जैसा उनका वास्तविक गुण-कर्म-स्वभाव है। यदि वे एक दूसरे को बदलने की कोशिश करेंगे अर्थात् पत्नी चाहे कि 'मैं पति को बदलूँ, उसकी आदतें बदलूँ' यह रवैया निस्संदेह बहुत हानिकारक होगा। पति चाहे कि 'मैं पत्नी की आदतें बदलूं' तो वह भी हानिकारक होगा। इसलिए दोनों एक दूसरे को 'जैसा है वैसा' स्वीकार करें। इनकी आदतें कैसी हैं, यह तो शादी से पहले सोचना चाहिए था। लड़का-लड़की को अगर आपस में एक दूसरे की आदतें स्वीकार नहीं हैं, तो शादी करनी ही नहीं चाहिए। इसलिए, पहले से एक दूसरे की परीक्षा करके- यदि एक दूसरे के गुण-कर्म-स्वभाव स्वीकार हों, तभी, वही शादी करनी चाहिए। जल्दबाजी में शादी नहीं करनी चाहिए। महज शक्ल देख ली, कुछ पैसा देख लिया, कुछ पढ़ाई-लिखाई देख ली। इतने मात्र से गृहस्थ जीवन सुखी नहीं बनता। और भी बहुत सारी बातों का अध्ययन, परीक्षण करना चाहिए। उनकी जो रूचियां हैं, आदते हैं, वे सब जांच करके फिर सोचना चाहिए कि यदि हमें एक दूसरे की आदतें, रुचियां, हॉबीज स्वीकार हैं तब ही विवाह करेंगे। और जब शादी हो गई तो फिर वे दोनों जैसे हैं वैसा ही उनको परस्पर स्वीकार करने की कोशिश करें।

पति और पत्नी दोनों ही इस बात का ध्यान रखें कि अपने-अपने जो भी दोष हैं, उनको दूर करें और जो अच्छी बातें हैं, अच्छे गुण हैं- उन पर अधिक फोकस करें, उनका अधिक ध्यान रखें।

जिन कामों के करने से पति को खुशी मिलती है, पत्नी उन कामों को करे। जिन कामों को करने से पत्नी को खुशी मिलती है, पति उन कामों को करे। आपस में एक दूसरे की प्रसन्नता के लिए कार्य-व्यवहार करें। पत्नी को कोई काम पसंद नहीं है तो पति उस काम को न करे। पति को कोई काम पसंद नहीं है तो पत्नी उस काम को न करे। इस तरह से ही एक दूसरे की भावनाओं का आदर करें।

एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना रखें। कुछ छोटी-मोटी बातें हैं जो एक दूसरे को पसंद नहीं होती उन बातों को सहन करने की कोशिश करें। यही सोचें कि कमियां तो प्रायः हर व्यक्ति में होती हैं। अपनी-अपनी कमियों को देखें। उन कमियों को दूर करें। दूसरे साथी के अच्छे गुणों को धारण करें। उनको सामने रखकर चलें तो ऐसा करने से आपस में संबंध बहुत अच्छा बनता है, प्रेम भाव बढ़ता है। एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और एक-दूसरे का आदर सम्मान बढ़ता है। इससे पति-पत्नी में बहुत अच्छा प्रेमपूर्ण और मजबूत संबंध बनेगा।

अमर बलिदानी बालक वीर हकीकत राय

❑डॉ० विवेक आर्य

पंजाब के सियालकोट मे सन् 1719 में जन्में वीर हकीकत राय जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। बड़े होने पर आपको उस समय कि परम्परा के अनुसार फारसी पढ़ने के लिये मौलवी के पास मस्जिद में भेजा गया। वहाँ के कुछ शरारती मुस्लमान बालक हिन्दू बालकों तथा हिन्दू देवी देवताओं को अपशब्द कहते रहते थे। बालक हकीकत उन सब के कुतर्कों का प्रतिवाद करता और उन मुस्लिम छात्रों को वाद-विवाद में पराजित कर देता।

एक दिन मौलवी की अनुपस्थिति मे मुस्लिम छात्रों ने हकीकत राय को खूब मारा पीटा। बाद में मौलवी के आने पर उन्होंने हकीकत की शिकायत कर दी। उन्होंने मौलवी के यह कहकर कान भर दिए कि इसने बीबी फातिमा को गाली दी है। यह सुनकर मौलवी नाराज हो गया और हकीकत राय को शहर के काजी के सामने प्रस्तुत कर दिया। बालक के परिजनों के द्वारा लाख गिड़गिड़ाने पर भी काजी ने एक न सुनी और शरिया के अनुसार दो निर्णय सुनाये। एक था सजा-ए-मौत, दूसरा था इस्लाम स्वीकार कर मुसलमान बन जाना।

माता पिता व सगे सम्बन्धियों ने हकीकत को प्राण बचाने के लिए मुसलमान बन जाने को कहा, मगर धर्मवीर बालक अपने निश्चय पर अडिग रहा और बंसत पंचमी सन १७३४ को जल्लादों ने १२ वर्ष के निरीह बालक का सर कलम कर दिया। वीर हकीकत राय अपने धर्म और अपने स्वाभिमान के लिए बलिदानी हो गया और जाते जाते हिन्दुओं को अपना सन्देश दे गया। बाद में वीर हकीकत का स्मृतिस्थल उनके बलिदान स्थल पर बनाया गया जहाँ हर वर्ष उनकी स्मृति में देश विभाजन से पूर्व तक मेला लगता रहा। १९४७ के बाद यह भाग पाकिस्तान में चला गया

कहानी...

आपबीती

❑डॉ० विवेक आर्य
drvivekarya@yahoo.com

सुरेश पंडित रात के दो बजे एकाएक नींद से उठकर बैठ गया। उसको सपने में श्रीनगर के समीप गांव में अपना घर, खलिहान, सेब के बाग, डल झील में शिकारे की सवारी, बर्फ से ढके पहाड़ और सुहाना मौसम दिख रहा था। तभी एक गोली चली जो उसके पिताजी का सीना चीरते हुए उन्हें सदा के लिए शांत कर गई। उसकी माँ, जो घर के आंगन में सफाई कर रही थी, एकाएक उसे बचाने घर के अंदर भागी तो एक सीधी गोली उसकी पीठ में आकर धंस गई। बालक सुरेश कुछ समझ पाता, इससे पहले उनकी दुकान पर काम करने वाले एक बूढ़े चाचा उसे पिछले दरवाजे से लेकर खेतों में जा छुपे। उनके घर पर आतंकवादी हमला हुआ था। उनके घर में आग लगा दी गई। जैसे ही आग की लपटें आसमान छूने लगीं, सुरेश की आँखें खुल गई। पूरा बदन पसीने से तरबतर। यह सपना सुरेश पिछले दशक में न जाने कितनी बार देख चुका था, पर रह-रहकर वह फिर याद आ जाता।

उसने अपने अतीत को याद किया जब १९८९ में आतंकवादियों ने उन्हें कश्मीर से भाग जाने की धमकी दी थी। स्थानीय मस्जिद के लाउडस्पीकर से अजान के बदले धमकी दी गई कि कश्मीरी हिन्दुओं यहाँ से भाग जाओ और अपनी स्त्रियों को हमारे लिए छोड़ जाओ। उसके पिता घर के मंदिर में गीता और कुरान शरीफ एक साथ रखते थे। वे किसी रोजे या ईद पर मुसलमानों के घर जाकर मेल मिलाप करना कभी नहीं भूलते थे। उनका कहना था कि हम यहाँ सदियों से एक साथ भाई-भाई बनकर रहते आये हैं। उन्हें हिन्दू-मुस्लिम एकता पर पूरा विश्वास था। उन्होंने उस धमकी को नजर अंदाज किया था। परिणामतः सुरेश का घर, माता-पिता, नगर सब सदा के लिए बिछुड़ गए। सुरेश का बचपन पहले जम्मू के टेंट में, फिर दिल्ली की कश्मीरी कालोनी में बदतर हालात में

यह आपबीती सुनकर सुरेश को रोना आ गया। उसकी और सीमा की आपबीती में कोई अंतर नहीं था। दोनों अपने पूर्वजों की धरती से बेदखल हुए थे। दोनों को अपने परिवारों के सदस्यों, अपनी धन-संपत्ति, अपने मान को खोना पड़ा था।

निकला। वहां रहने वाले हर कश्मीरी पंडित की जुबान पर लगभग यही कहानी थी। सुरेश जैसे तैसे बड़ा होकर सेना में शामिल हो गया। अपनी ड्यूटी वह बखूबी निभाता था।

सन् २००२ में सुरेश की ड्यूटी बंगलादेश बॉर्डर पर लगी थी। उसे सख्त हिदायत दी गई कि किसी को बॉर्डर के पार न जाने दे। एक दिन रात में उसने झाड़ियों में कुछ हलचल देखी। हवाई फायर कर उसने सचेत किया। उस दिशा में गोलियां भी चलाई मगर एक छोटी नहर के साथ की सूखी जमीन का फायदा उठाकर कुछ लोग भारत की सरहद में दाखिल हो गए। सुरेश उनके पीछे दौड़ा मगर अँधेरे का फायदा उठाकर वे भाग गए। इलाके की छानबीन के दौरान सुरेश को चार सोने के कंगन एक पोटली में बंधे मिले। वे उन्हीं घुसपैठियों के थे जो गिर गए थे। सुरेश ने उठाकर अपनी जेब में रख लिए। सोचा, कल कोई इसे लेने आएगा तो उसे पकड़ लूंगा। मगर कोई न आया। सुरेश उन्हें बार-बार निकालकर देखता। सोचता कि किसके होंगे। उसके मन में अनेक ख्याल आते। मगर वह कोई निर्णय नहीं ले पाया।

२००६ में सुरेश की ड्यूटी बनारस में संकट मोचन मंदिर के समीप लग गई। बनारस के माहौल में सुरेश अपने आपको धार्मिक वातावरण के अनुकूल बनाने में लगाने लगा। नित्य सुबह शाम मंदिर जाना उसकी दिनचर्या का भाग बन गया। सात मार्च को सुरेश संकट मोचन मंदिर आया था, तभी मंदिर के समीप एक जोर का बम धमाका हुआ। सैकड़ों हताहत हुए। अनेकों की लाशों के इतने टुकड़े हो गए कि पहचान में भी न आये। सुरेश हवा में उछल कर दूर जा गिरा और बेहोश हो गया। एक महीने के बाद उसकी आंख एक हस्पताल में खुली। उसे पता चला कि एक नर्स

सीमा द्वारा लगातार उसकी एक महीने तक सेवा हुई, जिससे उसके प्राण बच पाए। उसने सीमा को धन्यवाद दिया। मन ही मन आभार प्रकट किया।

सहसा उसे लगा कि सीमा के प्रति उसके मन में अलग विचार आ रहे थे। पर वह चुप रहा। अस्पताल से छुट्टी के दिन उससे रहा नहीं गया। वह जीवन में अकेला था। उसे एक जीवन साथी की आवश्यकता थी। सीमा उसे जीवन संगिनी बनाने के लिए सही लगी। उसने सीमा के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा और उसके सामने सोने के चार कंगन रख दिए। ये वही कंगन थे जो उसे बॉर्डर पर मिले थे। वर्षों से उसके पास सुरक्षित थे। पर यह क्या! कंगन देखते ही सीमा फूट-फूट कर रोने लगी।

सुरेश ने उससे इतनी जोर से रोने का कारण पूछा।

-आपको ये कंगन कहाँ मिले।

सुरेश ने सब कुछ बता दिया। सीमा ने रोते-रोते बताया कि ये कंगन उसकी माँ ने उसके और उसकी बड़ी बहन के लिए बनवाये थे। उनका परिवार बंगलादेश का रहने वाला था। २००२ के गुजरात दंगों की आंच भारत देश की सीमा लाँघ कर उनके यहाँ पहुंच गई। स्थानीय चुनावों में मुस्लिम गुंडों ने हिन्दुओं के घरों पर हमला कर दिया, ताकि वे वोट करने न जायें। अनेक हिन्दू लड़कियों को घरों से उठा लिया गया। उसकी बड़ी बहन ललिता भी उनमें एक थी। जिसकी लाश दो दिन बाद खेत में निर्वस्त्र मिली थी। ललिता के साथ सामूहिक बलात्कार हुआ था। उनका परिवार इतना डर गया कि उन्होंने तुरंत भारत आने का मन बना लिया। पिताजी ने एक दलाल को खोज निकाला जिसने सीमा पार कराने के बदले घर की सभी जमापूंजी मांग ली। मरते क्या न करते! जैसे तैसे रात को जीप में बैठकर सीमा से कुछ किलोमीटर पहले पहुंचे। रात को पैदल सीमा पार करने लगे। तभी भारतीय सेना को उनकी आहट मिल गई। गोलियों की बौछार से बचते हुए उन्होंने जैसे-तैसे सीमा पार कर ली। उसी दौरान उसके हाथ से कंगनों की पोटली गिर गई। वहां से कोलकाता और उधर से बनारस अपने दूर के रिश्तेदारों के यहाँ पहुंचे थे। पिछले कुछ समय से सीमा ने गुजारे के लिए उस हस्पताल में नौकरी कर ली थी।

यह आपबीती सुनकर सुरेश को रोना आ गया। उसकी और सीमा की आपबीती में कोई अंतर नहीं था। दोनों अपने पूर्वजों की धरती से बेदखल हुए थे। दोनों को अपने परिवारों के सदस्यों, अपनी धन-संपत्ति, अपने मान को खोना पड़ा था। दोनों का एक ही 'शांतिप्रिय' समुदाय ने शोषण किया था। दोनों एक ही बात सोच रहे थे कि-

क्या इस धरती पर हिन्दू होना पाप है? ✠✠✠

मुगलों के अत्याचार का शिकार एक विस्मृत लोकनायक

दुल्ला भट्टी

❒स्वामी अमृतपालसिंह अमृत

सन्दल बार के इलाके (अब पाकिस्तान) में मुगल बादशाह अकबर के दौर में एक मुसलमान राजपूत बागी हुआ था, जिसका नाम था 'दुल्ला भट्टी' (राय अब्दुल्ला भट्टी)। भट्टी कबीला राजपूतों की एक प्रसिद्ध शाखा है।

भारत-पाकिस्तान सरहद से लगभग २०० किलोमीटर दूर पाकिस्तान के पंजाब में 'पिंडी भट्टियां' गांव है। पंजाब की लोक-कथाओं का यह नायक 'दुल्ला भट्टी' इसी गाँव में पैदा हुआ था। दुल्ले के पिता और दादा भी मुगलों के बागी रहे थे। मुगल बादशाह हुमायूँ के वक्त उनको मार कर उनकी खाल में भूसा भरवा के गांव के बाहर लटकवा दिया गया था, क्योंकि उन्होंने मुगल सरकार को लगान देने से मना कर दिया था। बाप और दादा की मौत के ४ महीने बाद सन १५४७ में दुल्ला भट्टी का जन्म हुआ था।

जमींदारों और अमीरों को लूट कर गरीबों में बांट देने की दुल्ले की नीति की वजह से लोग अक्सर उसे पंजाब का राबिन हुड भी कह देते हैं। लड़कियों के अपहरणों को रोकने और इज्जत से उनकी शादियां एक पिता की तरह कराने की वजह से वह एक लोक-नायक बनकर उभरा।

दुल्ले से जुड़ी गाथाओं में सब से प्रसिद्ध कथा दो बहनों, सुन्दरी और मुंदरी की है। वे एक किसान की बेटियां थीं। गांव का नंबरदार उन लड़कियों से जबरन शादी करना चाहता था। लड़कियों के पिता ने दुल्ले से इस की शिकायत की। दुल्ले ने उस नम्बरदार पर हमला कर के उस के खेत जला दिये। दुल्ले ने खुद उन लड़कियों की शादी उनकी पसंद के लड़कों से करवाई और शादी में शगुन के तौर पर शक्कर दी, जैसा कि उन दिनों रिवाज था। पंजाब में मनाये जाते त्यौहार 'लोहड़ी' का सम्बंध दुल्ले द्वारा सुंदरी और मुंदरी की शादी कराने की घटना से ही जुड़ा हुआ है।

सुन्दर मुंदरिए! - हो। तेरा कौण विचारा? - हो।
दुल्ला भट्टीवाला - हो। दुल्ले दी धी विआही। -हो।
सेर शक्कर पायी। - हो। (धी=बेटी)

दुल्ला भट्टी को सन १५९९ में गिरफ्तार कर लिया गया। जल्दबाजी में ही उसे लोगों की एक भीड़ के सामने लाहौर शहर में फांसी पर लटका दिया गया। पंजाब की लोककथाओं के इस नायक दुल्ला भट्टी शहीद का मृतकशरीर लाहौर के मियानी साहिब कब्रिस्तान में दफन है।

हमारे आदर्श पुरुष

स्व० चौ० बिरखभान आर्य (सिवाहा)

(भूतपूर्व प्रधान गुरुकुल कालवा)

❑**अमित कुमार**, सिवाहा, जिला जींद (9728509096)

उठ जाग अरे राही अरे तूने है दूर यहां से जाना।
विकट पंथ और निशा अंधेरी मार्ग में गठकट हैं।
तीन पांच का जाल बिछा और चार चोर महाशठ हैं।
संभल संभल कर पग धर पंथी कठिन विकट अटवट हैं।
मार बुरी है दोनो की ना चक्कर में फंस जाना।।

जन्म

स्व० चौधरी बिरखभान आर्य जी का जन्म गांव सिवाहा (जिला संगरुर उस समय तहसील जींद) में सन् 1917 में चौधरी झाभर सिंह जी के घर पर हुआ। वे गांव के एक ध ार्मिक प्रतिष्ठित किसान थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनभरी देवी जी धर्मपरायण स्त्री थी। उस जमाने में जब शिक्षा न के बराबर थी तब चौधरी बिरखभान जी ने मिडल तक शिक्षा ग्रहण की। शिक्षा के साथ साथ मात पिता का कृषि कार्य में हाथ बंटाना बिरखभान जी परम कर्त्तव्य समझते थे। पढ़ाई लिखाई के बाद बिरखभान जी 1948 में फौज में भर्ती हो गए, और 1969 तक रहे। फौज के दौरान ही बिरखभान जी का विवाह हुआ। दुर्भाग्यवश इनकी पत्नी का देहांत विवाह के कुछ महीने बाद ही हो गया। परिवार के अन्य सदस्यों के दबाव के बावजूद बिरखभान जी ने दूसरा विवाह नहीं करवाया।

आर्यसमाज में प्रवेश

एक समय था जब आर्यसमाज हरियाणा के गांव-गांव शहर-२ में पकड़ बना रहा था। मेरे गांव सिवाहा में 1938-39 के आसपास स्व० श्री हरनारायण जी गांव के प्रथम आर्यसमाजी बने। आर्यसमाज के नियमानुसार वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है। इन्होंने अपने गांव सिवाहा में वैदिक धर्म से लोगों को अवगत कराया। गांव के नवयुवकों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। घर-घर में आर्य बनने लगे। ग्राम सिवाहा का आर्यसमाज इस क्षेत्र का प्रसिद्ध आर्यसमाज बन कर उभरा। पंडित दादा बस्तीराम, स्वामी भीष्म जी महाराज, बड़े बड़े प्रतिष्ठित आर्योपदेशकों के प्रचार गांव में हुए। यही प्रभाव चौधरी बिरखभान जी पर पड़ा। इन्होंने आर्यसमाज को न केवल अपनाया अपितु पूरा जीवन ही ऋषि सिद्धांत (वेद प्रचार) में लगा दिया। फौज में रहने के बावजूद चौधरी बिरखभान जी के दिल में आर्यसमाज के लिए तड़फ रहती। आपने देश में खुले हर कन्या गुरुकुल में आजीवन दान किया। आर्यसमाज से प्रभावित यह परिवार आज भी यानी चौथी पीढ़ी फौज में देश सेवा कर रही है।

कुंडली बूचड़खाना में जेल यात्रा

कुंडली जिला रोहतक जी टी रोड़ पर एसैक्स कम्पनी द्वारा खुले बुचड़खाने का विरोध पूरे हरियाणा में हुआ। इसके लिए विरोध समिति का गठन हुआ, जिसका संचालन आचार्य भगवान देव जी (स्व० स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती) कर रहे थे। दो मुख्यमंत्री यानी पं० भगवत दयाल शर्मा व राव विरेन्द्र सिंह को ज्ञापन सौंपने के बावजूद भी बूचड़खाना बंद न हुआ। इससे क्षुब्ध होकर 28 फरवरी 1968 में कुंडली गांव नरेला मोड़ पर हजारों आर्य वीर आमरण अनशन में जत्थे लेकर पहुँचे। एक जत्था गांव सिवाहा से भी गया। गांव के चौधरी बिरखभान आर्य, चौधरी रण सिंह आर्य, रामस्वरुप आर्य, कुंदन आर्य, खजान सिंह आर्य लालचंद आर्य ओर भी अन्य (नाम ज्ञात नही) आर्य वीर गए। इस सत्याग्रह में चौधरी बिरखभान जी अपने सहयोगियों के साथ सात दिन जेल में रहे।

गुरुकुल कालवा की प्रधानता

कालवा गांव की सार्वजनिक तथा श्री चौधरी बनवारी लाल जी की साढ़े ग्यारह बीघा भूमि में गांव के प्रेमी सज्जनों की प्रेरणा से संवत् २०२४ तदनुसार सन् 1968 ई० में श्री स्वामी चन्द्रवेश जी (श्री चन्द्रवेश जी नैष्ठिक वेदाचार्य) और स्वामी सत्यवेश जी (श्री वेदपाल जी) ने सतत् परिश्रम करके गुरुकुल स्थापित किया। गुरुकुल के संचालन हेतु व गौशाला, अनाज भंडारण इत्यादि आवश्यकताएँ भी थीं। नजदीक ही आर्यों की भूमि गांव सिवाहा से आर्यों ने सैंकड़ों मण अनाज गुरुकुल को दान दिया और गुरुकुल संचालन के लिए हर संभव सहायता

प्रदान की। इसमे तन मन धन से समर्पित सज्जन चौधरी बिरखभान जी की मुख्य भूमिका रही। इनकी कार्य शैली, त्याप व तप को देखते हुए गुरुकुल प्रबंधन समिति द्वारा चौधारी बिरखभान जी को गुरुकुल का प्रधान बनाया गया। इसके बाद आप आखरी सांस तक प्रधान रहे। सन् 1971 में गुरुकुल को प्रबंधकर्तृ सभा ने तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी को पूर्ण अधिकारों सहित समर्पित कर दिया। आचार्य बलदेव जी महाराज व चौधरी बिरखभान जी ने गुरुकुल के विकास तथा आस पास के गांवो में आर्यसमाजों की स्थापना के लिए दिन रात एक कर दिया। गुरुकुल में यज्ञशाला, पुस्तकालय, नवीन गौशाला, व्यायाम शिविर, पानी का प्रबंध किया। गुरुकुल के प्रचार हेतु चौधरी बिरखभान जी ने भजनोपदेशकों को गांव-गांव में प्रचार हेतु भेजा, जिसमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक जी, स्वामी रुद्रवेश जी, पं० शोभाराम प्रेमी, पं० सत्यपाल, श्री रामकुमार आर्य जी ने निभाई।

चौधरी बिरखभान जी न केवल गुरुकुल को समर्पित थे, अपितु उन्होंने राष्ट्रीय गौशाला धड़ौली के निर्माण में भी अपना सहयोग किया। चौधरी बिरखभान जी धड़ौली गौशाला निर्माण सभा के प्रथम सदस्य थे। गौशाला में ३०० मण से अधिक अनाज गांव सिवाहा से संग्रह करके दान किया। आज भी गांव सिवाहा से गौशाला के लिए अनाज संग्रह होता है।

गांव में आर्यसमाज का प्रचार प्रसार

चौधरी बिरखभान जी के मन में आर्यसमाज के प्रचार की तड़प कभी कम नहीं होती थी। उन्होने सुप्रसिद्ध व निडर भजनोपदेशक पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक जी को अपने गांव सिवाहा तथा नजदीकी गांवों में प्रचार हेतु बुलाया। गांव में चार चार दिन तक वेद प्रचार होता। गांव के अलग-अलग पान्ने, ठोळे से श्रोता उपदेश सुनते। इसके अलावा गुरुकुल के योग प्रचारकों को बुलाकर योग के प्रति जागरुक कराते, आर्य वीर दल के शिविर लगवाते।

एक बार चौधरी बिरखभान जी को सूचना मिली कि गांव में चन्द्र बादी का सांग होगा। चौधरी बिरखभान जी व चौधरी रणसिंह जी ने सांग का विरोध कर दिया। गांव में पं० चन्द्रभानु, स्व० मंगल वैद्य, स्वामी रुद्रवेश जी, रामकुमार जी (पं० चन्द्रभानु जी के शिष्य) भजनोपदेशकों को बुलाकर जलसा रख दिया। यह सूचना पाकर चन्द्रबादी गांव में आया ही नहीं। चौधरी बिरखभान जी अपनी फौज की सारी पैंशन समाज सुधार कार्य तथा कन्या गुरुकुलों में पत्र व्यवहार करके दान कर देते थे। मेरे इन्हीं श्रेष्ठ पूर्वजों का प्रभाव रहा कि गांव में आज कोई नास्तिक, वामपंथी विचारधारा से नहीं जुड़ा है।

देह त्याग

चौधरी बिरखभान जी का जीवन ऐसे ही पुरुषार्थों से भरा रहा। 15 जनवरी २००३ को सर्वदानी चौधरी बिरखभान जी ने अपनी अंतिम सांस ली। उस समय चौधरी बिरखभान जी 86 वर्ष के थे। यह सूचना मिलते ही आचार्य बलदेव जी, स्वामी वेदरक्षानंद जी, योगेन्द्र पुरुषार्थी जी, अन्य वैदिक विद्वानों और आर्यसमाज के नेताओं की उपस्थिति में समस्त गांव सिवाहा के सज्जनों ने वैदिक रीति से चौधरी बिरखभान जी का अंतिम संस्कार किया। मेरा चौधरी (दादा) बिरखभान जी को शत शत नमन। आपका पुरुषार्थ चिरस्मरणीय रहेगा। वैदिक धर्म की जय।

भजनोपदेशक का रौद्र रूप

प्रस्तुति : डॉ० विवेक आर्य

सन् १९४७ ! सर्दियों के मौसम में लाला छबीलदास आर्य प्रधान आर्यसमाज उकलाना मण्डी व मंत्री लाला गजानन्द आर्य ने वेद प्रचार कराया। प्रचार का मुख्य बिन्दु पाखण्ड खण्डन व अस्पृश्यता उन्मूलन था। आर्य समाज ने पौराणिक बंधुओं को खुले मंच से चुनौती दी। कोई भी सामने न आया तो आर्यों ने अपना प्रचार आरम्भ कर दिया।

शास्त्रार्थ करने की हिम्मत किसी में न बनी तो उन्होंने दूसरे तरीके से कार्यक्रम को बन्द कराने की ठानी। उनमें से एक पण्डित ठाकुर दास भार्गव, जो कि मण्डी के सनातन धर्म मन्दिर से सम्बन्धित थे, मन्दिर के ऊपर चढ़ गए और जोर जोर से चिल्लाने लगे कि ये प्रचार बंद करो नहीं तो मैं ऊपर से छलांग लगा दूँगा। सभा में उपस्थित लोग हतप्रभ हो गए। ऐसी धमकी देने पर भजनोपदेशक रघुवीर सिंह आर्य जोश में आ गए। प्रधान जी से बोले कि यह तो कोरी धमकी दे रहा है, यह वहाँ से नहीं कूदेगा। मैं अभी कुल्हाड़ा लेकर ऊपर जाता हूँ और उसे काट कर नीचे फैंक देता हूँ।

उनके रौद्र रूप को देखकर जनसमूह सन्न रह गया व पण्डित ठाकुरदास को पसीने छूटने लगे। पोल खुलते देखकर उनकी बहन चित्रा सामने आ गई और बोली- स्वामी जी, नीचे आ जाओ, ये लोग आर्य समाजी हैं, इस प्रकार से धमकियों में नहीं आएँगे। इस पर पण्डित भार्गव नीचे आ गए और मामला शांत हो गया। आर्यसमाज का प्रचार जोर शोर से होने लगा। *(श्री गजानन्द आर्य के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र आर्य रीवा के संस्मरणों पर आधारित, भजनोपदेशक के नाम में अन्तर हो सकता है।)*

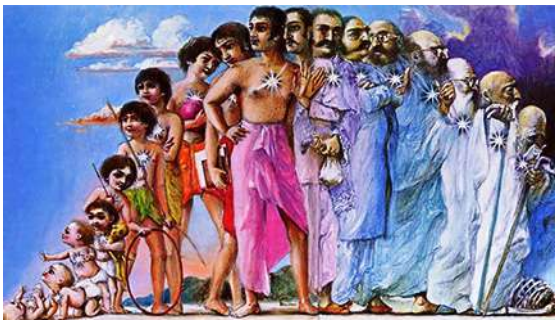

अब मैं कौन उपाय करूँ

भवसागर पार तरूँ

लेखक: श्री पू० महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

संसार-सागर के थपेड़ों में, इसकी भयंकर तरंगों में और नाना समुद्रीय प्राणियों में, अपने आप को घिरा पाकर इस सागर में गोते खाने वाला पुकार उठता है कि क्या कभी इससे छुटकारा मिल सकेगा? संसार सागर की गति को देखकर, इसमें पड़े जीवों की दयनीय अवस्था को निहार कर, प्राणियों के हाहाकार को सुनकर मानव को यह प्रतीत होने लगता है, कि बहुत बुरी तरह से फंस गये हैं, कैसे यहां से निकलना हो सकेगा? कैसे इस अथाह सागर को पार कर पायेंगे?

सारे दर्शनों के ऋषियों ने केवल इसीलिये दर्शन ग्रन्थ बनाने का कष्ट उठाया, ताकि किसी प्रकार संसार के दु:खों से मुक्ति मिल जाये और दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति हो जाये। परन्तु यह संसार-सागर न तो दु:ख-सागर है और न ही सुख-सागर है, यह तो परमात्मा की अपार कृपा का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है, जिसके द्वारा हर एक प्राणी को सुअवसर मिलता है कि वह भोग भी भोगे और आनन्दस्वरूप के परमधाम-आनन्द धाम में पहुंच कर आनन्द ही आनन्द, मोद ही मोद तथा प्रमोद ही प्रमोद को प्राप्त कर ले।

'यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुद: प्रमुद: आसते।' ऋ० ९/११३/११

और यह मानव देह तो मिलता ही इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये है, ताकि जन्म जन्मान्तर के किये कर्मों के फल भोगते हुए प्यारे प्रभु से मिलाप का शुभ प्रयत्न हो सके-

इयं ते यज्ञिया तनू: स (यजु०)

'तेरा यह तन पूज्य प्रभु से मिलने का साधन है।'

अपने प्रियतम से मिलने का साधन शरीर तो मिल गया, परन्तु मानव तो इसे पाकर अधिक दु:खी हो उठा है, और कितने मानव तो इतने घबरा उठते हैं कि इस पवित्र, दुर्लभ साधन को तोड़ फोड़ कर परे फैंक देना चाहते हैं। कोई तो इसी प्रतीक्षा में रहते हैं कि यह मट्टी में कब मिले, कोई अपने दु:ख को भूलने के लिये मादक द्रव्यों का सेवन करने लगते हैं, कोई दो घड़ी के लिये 'गम-गलत' करने के लिये सिनेमा आदि खेलों की शरण लेते हैं, कोई ताश, शतरंज ले बैठते हैं। कोई अभक्ष्य, स्वादु पदार्थों में मन को हृदय मन्दिर को जब सर्वथा निर्मल बना लिया जायेगा तभी तो वह परमज्योति वहां जागेगी। मन को रखूं मलिन, अन्त:करण में मल, विक्षेप, तथा आवरण के दोष विद्यमान रहें और फिर प्रभु-दर्शन न होने की शिकायत होती रहे तो यह उचित न होगा। मैं तो माया का चेरा बना रहूं, पूजा करूं प्रकृति की। विकारों और भोगों के अम्बार एकत्र करता रहूं। और चाहूं पहुंचना उस परम उज्ज्वल, निर्विकार, माया से परे, आनन्द धाम के स्वामी के पास! कैसे हो सकेगा यह?

अटका लेते हैं और कोई स्पष्ट आत्महत्या करके समझते हैं कि छुटकारा हो गया। स्पष्ट आत्महत्या हो अथवा अस्पष्ट, ये सारे कृत्य आते आत्महत्या की संज्ञा ही में हैं, यह आत्महत्यारे यह भूल रहे हैं कि संसार सागर से पार होने का साधन आत्महत्या नहीं। विचार तो सही मानव! कि इस शरीर को छोड़ कर क्या दुनिया को भी छोड़ सकोगे और कहीं विश्राम पा सकोगे? कवि ने ठीक कहा है-

अब तो घबरा के कहते हैं कि मर जायेंगे।
मरकर भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे।।

छूटने के, पार हो जाने के ये तरीके सर्वथा बन्धन तथा दु:ख के हेतु हैं, दर्शन शास्त्रों के अनुसार जब तक द्रष्टा (जीवात्मा) का दृश्य (प्रकृति से बने जगत्) के साथ सम्बन्ध है, तब तक दु:ख-सुख, मरण-जन्म, पाप-पुण्य= यह द्वन्द्व बने ही रहेंगे। दु:ख-सुख का अनुभव करने वाला जीवात्मा ही है, परन्तु यह अनुभव तब करता है जब शरीर, इन्द्रिय और इन्द्रियों के विषयों के साथ आत्मा का सम्बन्ध होता है। इन तीन प्रकार के बन्ध के आत्यन्तिक नाश होने पर ही भव-सागर से पार होने का शुभ अवसर मिलता है।

दु:खों से अत्यन्त निवृत्ति का साधन यही है कि इधर उधर भटकने की अपेक्षा उस परम वैद्य के पास पहुंचें जो दु:खों, कष्टों, क्लेशों से परे, पूर्ण परम आनन्द है और जिस की सहायता से मानव तीव्र-इच्छा, बुद्धि पूर्वक भरसक प्रयत्न, तीव्र वैराग्य और पर्याप्त अभ्यास से आनन्द-धाम

तक जा पहुंचता है।

वहाँ तक कौन नहीं पहुंचते–

जब यह जगत् रचा ही इसीलिये गया और यह मानव शरीर दिया ही इसलिये गया, ताकि मनुष्य परमानन्द को प्राप्त कर सके, तब वह प्रभु मिलता क्यों नहीं, वह दर्शन देता क्यों नहीं, छिपा क्यों बैठा है वह? वास्तविक तथ्य तो यह है कि छिपा हुआ वह नहीं, हमने ही अपनी आंखें बन्द कर रखी हैं, ऋग्वेद के दसवें मण्डल में स्पष्ट बतलाया है कि–

ओम् न तं विदाथ य इमा जजानान्यद् युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।

'जिस (परमात्मा) ने (सबको) जन्म दिया है, वह तुम से अलग है, पर है तुम्हारे अन्दर। तथापि तुम उसको जानते नहीं हो। (क्यों नहीं जानते? इसलिये कि प्रायः लोग) (१) कुहर– अविद्या– अज्ञान से ढपे हुए हैं (२) व्यर्थ के वाद विवाद ही में रत हैं (३) प्राणों के पोषण में तत्पर–पेटू बने हुए हैं, अथवा (४) उक्थ–कोरे भजन–कीर्तन में लगे हुए ही, आयु बिता देते हैं।'–

इस माया के मायाधर को, नानारूप धारण करने वाली प्रकृति के प्रेरक को, इस आभाविहीन जड़ माया में सुन्दरता भरने वाले कारीगर को, चन्द्रमा की चन्द्रिका के स्वामी को– हां, इस सारे खेल के सूत्रधार को देखने में मानव क्यों सफल नहीं होता, इसका रहस्य ऊपर के मन्त्र में बतला दिया है। अविद्या या अज्ञान के कुहरे ने जिन मनुष्यों के अन्तःकरण को ढांप रखा है, वह मायापति को कैसे देख पायेंगे?

अविद्या ही तो मूल कारण है सारे क्लेशों तथा दुःखों का। इस अविद्या के वशीभूत हुआ मनुष्य अनात्म को आत्मतत्त्व समझ बैठता है। वास्तव में जो विषय और पदार्थ दुःख का कारण हैं, उन्हीं में सुख मानने लगता है। अपवित्र को पवित्र समझ कर उसी की पूजा में तत्पर रहता है। परन्तु यह अविद्या या अज्ञान आता कहां से है? क्यों यह कुहरे की तरह मनुष्य के अन्तःकरण पर छा जाता है?

हमारे पूर्वजों ने सूक्ष्म से सूक्ष्म बात की खोज की और उसका पता भी पा लिया–सुनिये यह अविद्या कहां से आती है? सृष्टि–विज्ञान के ज्ञाता जानते हैं कि सोई हुई तीनों गुणों= सत्– रज–तम–में सम अवस्था वाली प्रकृति में जब परमात्मा ने अपनी सविता शक्ति द्वारा गति उत्पन्न की तो उसका सबसे पहला परिणाम 'महत्तत्व' था। यह महत्तत्त्व सतोगुण की विशुद्धता से समष्टि रूप में सत्त्वमय चित्त कहलाता है, इसी से व्यष्टि चित्त बनते हैं, इन व्यष्टि चित्तों में जो लेश मात्र तम होता है, उसी तम में अविद्या रहती है और जब आत्मा द्वारा चित्त प्रतिबिम्बित होता है, तो आत्मा अविद्या के कारण यह समझने लगता है कि चित्त मैं ही हूं– बस यहीं से सारे क्लेशों, दुःखों, राग–द्वेषों का भान होने लगता है। चित्त में आत्म बुद्धि कर लेना दुःख सागर में डूबे रहना है। यही तो हृदय–ग्रन्थि है, जिसे खोले और तोड़े बिना शान्ति मिलती नहीं।

योग मार्ग में इस अविद्या–अज्ञान–हृदय ग्रन्थि को दूर करने का उपाय 'विवेकख्याति' बतलाया है। विवेकख्याति उस अवस्था का नाम है जब साधक आत्मा, अनात्म वस्तुओं को पृथक्–पृथक् देख लेता है। इसका क्रम जो अनुभव में आया है वह यह है कि–

यम नियमों को अपने जीवन का अंग बनाते हुए, आसन को दृढ़ कर, पहले प्राणायाम द्वारा नाड़ी शुद्धि की जाती है। तब ग्रीवा, पीठ सीधी रख कर, नेत्र मूंद कर ध्यान भृकुटि=आज्ञा चक्र में जमाया जाता है, निरन्तर बार–बार यह धारणा करने से कि वहां ओम् अक्षर अथवा ज्योति है, जब यह धारणा परिपक्व हो जाती है तो वहां अभीष्ट पदार्थ अन्तर चक्षु से दिखाई देने लगता है, तब वही ज्योति ललाट चक्र से होती ब्रह्म रन्ध्र=जो विज्ञान का एक केन्द्र है और जहां मन मण्डल, बुद्धि मण्डल तथा इन्द्रियों के सूक्ष्म गोलक हैं– में जा पहुंचती है। इसी को सहचार चक्र भी कहते हैं। यहां मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों को भिन्न–भिन्न रंगों में देखा जाता है। यहीं दिव्य निर्मल शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध का साक्षात्कार होता है।

यह ध्यान की पहली परिपक्व अवस्था है। कितने ही मतों वाले इस तमाशे ही को वास्तविक दर्शन समझ बैठे हैं, परन्तु यह तो सब के सब भौतिक पदार्थ हैं, चाहे दिव्य और सूक्ष्म हैं।

इन पंचतन्मात्राओं से भी अन्तर्मुख होना होता है और फिर ध्यान की दूसरी परिपक्व अवस्था में 'अहंकार' का साक्षात्कार होता है, परन्तु वह अहंकार भी तो भौतिक वस्तु है–अतएव इस अहंकार से भी अन्तर्मुख होकर ध्यान की तीसरी परिपक्व अवस्था में 'अस्मिता' का साक्षात्कार होता है। यह अस्मिता वही महत्तत्व ही तो है, परन्तु है तो भौतिक ही। अब इस अस्मिता से भी अन्तर्मुख होकर ध्यान की चौथी परिपक्व अवस्था में 'प्रकृति' का साक्षात्कार होता है–हां, उस प्रकृति का जो तीनों गुणों की सम अवस्था वाली है, चाहे यह अत्यन्त सूक्ष्म और अनिर्वचनीय ही है परन्तु है तो भौतिक ही, इसलिये इस प्रकृति को भी भूल कर ध्यान की जब पांचवीं परिपक्व अवस्था आती है तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।

अब साधक ने अनात्म वस्तुओं के अतिरिक्त

आत्मतत्त्व भी देख लिया, वह दोनों के भेद को जान गया। उसे 'विवेकख्याति' का स्थान प्राप्त हो गया, जहां पहुंचकर अविद्या, अज्ञान का नाश हो जाता है। जब आत्म-दर्शन पाकर अविद्या का अन्धकार दूर हो गया तो अब वेद मंत्र में बतलाई अगली तीन बातें स्वयमेव हट जाती हैं-साधक व्यर्थ का वाद-विवाद क्यों करेगा? अब तो कुछ कहने सुनने के लिये शेष रहा ही नहीं। साधक शारीरिक रक्षा के लिये-इस अन्नमय कोश तथा प्राणमय कोश के लिये केवल आवश्यक सामग्री तो जुटा देगा, इससे अधिक नहीं; और यह सामग्री भी इसी लिये एकत्र की जायगी ताकि 'इमम् अमृतं सुखं रथं'-इस अमृत तक पहुंचने में सहायक सुखप्रद रथ पर-स्थित होकर परमधाम को पहुंच सके। तब वह पेटू नहीं बनेगा, इन्द्रियों ही को सन्तुष्ट करने और इन्हीं की पूजा करने वाला विरोचनबुद्धि नहीं बनेगा, न ही वह कोरा कीर्तन करने वाला केवल दिखाने मात्र के लिये भजन करने वाला भी नहीं होगा, क्योंकि वह उस अन्दर वाले अपने प्यारे से मिलने के अलौकिक स्वाद को चख चुका है।

मानव यदि चाहता है कि वह इस सागर से पार हो जावे तो उसे (१) विवेकख्याति द्वारा अविद्या-अज्ञान-दूर करना होगा, (२) बकबक झकझक से बचना होगा, (हो सकता है मौन-साधना का नियम इसीलिये बनाया गया हो) (३) केवल शरीर रक्षार्थ खान पान करते हुए इन्द्रियों के पीछे पागल नहीं बनना होगा। और (४) हृदय में उसी प्यारे को बिठला कर उसका मानसिक जप तथा उसके गुणों का चिन्तन करना होगा, केवल कोरा कीर्तन नहीं। इनके विपरीत चलने वाले आनन्द धाम तक पहुंच नहीं पायेंगे और दुःख सागर की तरंगों में जन्ममरण के चक्र में उलझे रहेंगे।

वेद भगवान् ने यह बात भी छिपाकर नहीं रखी कि कौन लोग उसे पाते हैं-सामवेद के ३८वें मंत्र में स्पष्ट आदेश है-

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम्।।

'हे सब जीवों के हितकारी अग्ने प्रभु। तुझे प्रिय हों-कौन? (१) (सूरयः) ज्ञानी, विज्ञान्-स्वाध्यायशील लोग, (२) (यन्तारः) मन का वशीकार करने वाले, (३) (ये जनानां मघवानः) जो मनुष्यों में इन्द्र बनते हैं। (४) (गोनां ऊर्व दयन्ते) इन्द्रियों के समूह को सुरक्षित करते हैं।'

ऊपर ऋग्वेद के मंत्र में यह बतलाया था कि चार अवगुण जिनके अन्दर हों वे परमात्मा का दर्शन पा नहीं सकते और सामवेद के इस मंत्र में वह चार गुण बतलाये हैं जिनके द्वारा साधक परमात्मा का प्यारा बन कर उसी का हो जाता है।

इस मंत्र में तीसरा गुण इन्द्र बनना बतलाया है। इन्द्र की डिग्री उसको मिलती है जो हर प्रकार के असुरों पर विजय प्राप्त कर ले, अर्थात् 'जम्भ असुर'= हर समय खाने ही की सोचते रहना। जैसे आजकल यह वृत्ति बन रही है कि 'खाओ पीओ और ऐश उड़ाओ' या रोटी ही रोटी के नारे लगाते रहना। 'बल असुर'= निर्बलों पर अत्याचार करने की भावना। क्रोध तथा अभिमान में फूले रहना। ये सारी वृत्तियां आसुरी वृत्तियां हैं, इनको जो जीत लेता है, वह इन्द्र है। प्रभुप्रिय बनने के लिय इन्द्र बनना आवश्यक है।

ज्ञान के बिना तो एक भी पग प्रभु-दर्शन के मार्ग पर उठाया नहीं जा सकता, परन्तु कोरा ज्ञान भी कुछ नहीं, जब तक साधक का अधिकार मन तथा इन्द्रियों पर नहीं हो जाता। परमात्मा का निवास होता ही उस हृदय में है, जो वासनाओं और अज्ञान के अन्धकार से खाली हो।
सामवेद के पहले ही मंत्र में बतला दिया है-
'नि होता सत्सि बर्हिषि।'

हृदय मन्दिर को जब सर्वथा निर्मल बना लिया जायेगा तभी तो वह परम ज्योति वहां जागेगी। मन को रखूं मलिन, अन्तःकरण में मल, विक्षेप, तथा आवरण के दोष विद्यमान रहें और फिर भी प्रभु-दर्शन न होने की शिकायत होती रहे तो यह उचित न होगा। मैं तो माया का चेरा बना रहूं, पूजा करूं प्रकृति की। विकारों और भोगों के अम्बार एकत्र करता रहूं। और चाहूं पहुंचना उस परम उज्ज्वल, निर्विकार, माया से परे, आनन्द धाम के स्वामी के पास! कैसे हो सकेगा यह? हां, यदि सामवेद के आदेशानुसार चार गुण भक्त के हृदय को रंग दें और हृदय में प्रभु ही प्रभु विराजमान हो जायें तो फिर यह संसार जो दुःखों का सागर प्रतीत होता है, सुखसागर दृष्टिगोचर होने लगेगा, क्योंकि अन्तःकरण आनन्दस्वरूप भगवान् के प्रेम से भरपूर हो चुका है। उर्दू के एक कवि ने ठीक कहा है-

उलफत में बराबर है, वफा होकि जफा हो।
हर चीज मे है लज्जत, गर दिल में मजा हो।।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वास्थ्य चर्चा

सर्वोपयोगी आंवला

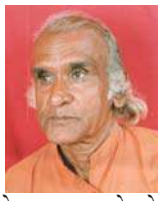

❒ आयुर्वेद शिरोमणि डॉ० मनोहरलाल अग्रावत

आँवले में जीवनदायिनी शक्ति पाई जाती है। यह शक्तिवर्द्धक और स्वास्थ्यवर्द्धक दोनों ही है। यह शरीर की ऊष्मा को सुरक्षित रखता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है, बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है, दन्तपंक्तियों को उज्ज्वल चमक देता है। यह हृदय तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। यह मस्तिष्क के तन्तुओं में तरावट रखता है। इसमें एक विशेष गुण यह भी है कि गर्म करने अथवा सुखाने पर इसकी यह शक्ति नष्ट नहीं होती। प्राय: सभी फलों के खाद्योज गर्म करने अथवा सुखाने पर नष्ट हो जाते हैं। पर आँवले में कुछ ऐसे अम्ल तत्त्व होते हैं जो गर्म करने अथवा सुखाने पर उसके गुण को नष्ट नहीं होने देते।

महर्षि चरक का कथन है कि-'संसार के अन्दर अवस्था अस्थापक जितने द्रव्य हैं उनमें आँवला सबसे प्रधान है।' आँवला रक्तशोधक, वृद्धावस्था को युवावस्था सी शक्ति देने वाला; अतिसार, प्रमेय, अम्लपित्त, रक्तपित्त, वातपित्त, अजीर्ण, अरूचि, खाँसी, ज्वर इत्यादि रोगों का नाशक, नेत्र ज्योति को तेज करने वाला, वीर्य को दृढ़ करने और आयु की वृद्धि करने वाला है।

आँवले की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सभी प्रकार के प्रकृति वाले व्यक्तियों की, सभी प्रकार के ज्वर, मूत्र कृच्छ, योनि दाह एवं उपर्युक्त अनेकानेक रोगों में रामबाण की तरह अचूक पाया गया है।

कुछ प्रयोग : इसकी सेवन विधि भी सुगम है। मुरब्बा व अचार के रूप में इसका लोकप्रिय प्रयोग तो सर्वविदित है।

(१) नमक और काली मिर्च के साथ इसका कच्चा फल (हरा आँवला) बहुत स्वादिष्ट लगता है। भोजन के बाद इस रूप में इसका सेवन जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। क्षुधा को बढ़ाता है। रक्त को साफ रखता है और दाँतों को मोती की तरह चमकाता है व शरीर को निरोगता प्रदान करता है।

(२) आँवले की चटनी भी बनाई जाती है-धनिया, पुदीना के साथ खटाई के स्थान पर इसका प्रयोग गुणकारी होता है।

(३) भोजन के पश्चात् आँवले के सूखे टुकड़ों को सुपारी की तरह खाया जाता है। भोजन के साथ या बाद में इसके सेवन से परिपाक ठीक रहता है और मस्तिष्क में स्फूर्ति बनी रहती है।

(४) आँवले को आग में भूनकर नमक के साथ भर्ता बनाकर खाया जाता है। इससे हाजमा सुधरता है।

(५) आँवले का मुरब्बा चाँदी के बर्क के साथ खाने से ग्रीष्म ऋतु में शीतलता और शक्ति प्रदान करता है।

(६) आँवले का चूर्ण शहद के साथ खाना हृदयोद्वेग, मंदाग्नि और दुर्बलता में बहुत लाभदायक होता है।

(७) इसके पत्तों को पानी के साथ उबालकर कुल्ला करने से मुंह के छाले नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि इसके पत्तों में टेनिक एसिड का भाग पाया जाता है।

(८) इसके बीज की मगज को कूटकर गर्म पानी में उबालकर उस पानी से आँखें धोने से बहुत दिनों की दु:खी हुई आँखें अच्छी होती हैं।

(९) दही के साथ आँवले का सेवन करने से रक्त पित्त (नकसीर) में लाभ होता है।

(१०) आँवले के पत्तों को कपूर के साथ पानी में पीसकर सिर पर लेप करने से नकसीर का आना तत्काल बंद हो जाता है।

(११) सूखे आँवले, चित्रक की जड़, छोटी हर्र, पीपल और सेंधे नमक को समभाग में लेकर चूर्ण कर लें। इसके खाने से सब प्रकार के ज्वर (बुखार) दूर होते हैं।

(१२) लोह भस्म के साथ आँवले का सेवन करने से कामला, पाण्डु (पीलिया) और रक्त अल्पता (खून की कमी) के रोगों में लाभ होता है।

(१३) दस ग्राम आँवला रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रात:काल आँवलों को मसलकर छान लें। इस पानी में थोड़ी मिश्री और जीरे का चूर्ण मिलाकर सेवन करें। तमाम पित्त रोगों की रामबाण औषधि है। इसका प्रयोग १५-२० दिन करना चाहिये।

(१४) **हृत्कम्प**-आँवला सूखा और मिश्री दोनों ५०-५० ग्राम लेकर बारीक कूट पीस छानकर सुरक्षित रख लें। प्रतिदिन छ: ग्राम औषधि पानी के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में हृदय के सभी रोग दूर हो जाएंगे, अत्यन्त सस्ता परन्तु अनुपम योग है।

(१५) हरड़ा, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, काली मिर्च और पीपल सभी को समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें, प्रतिदिन ३-३ ग्राम दवा शहद के साथ चाटने से हर प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है।

(१६) कै (उल्टी) और श्वास पर-आँवले के रस में शहद और पीपल डाल कर देना चाहिये।

(१७) मस्तकशूल (सिरदर्द) पर प्रात:काल आँवले का चूर्ण

घी और शक्कर के साथ देना चाहिये।
(१८) मूर्छा पर आँवले के रस में घी डालकर पिलाना चाहिये।
(१९) खुजली पर आँवले की राख को खोपरे के तेल (नारियल के तेल) में मिलाकर शरीर पर लगाना चाहिये। इससे खुजली मिटती है।
(२०) रात के समय आँवले का चूर्ण दूध के साथ लेने से दस्त साफ होता है व बालों और नेत्रों को बल देता है।
(२१) आँवले के टुकड़े करके, रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल उसके जल से केशों को धोने से नेत्रों की ज्योति में वृद्धि होती है एवं केश काले और मुलायम बने रहते हैं।
(२२) सूखे आँवलों को पीसकर कपड़े से छानकर रखलें और नींबू के रस में मिलाकर मेंहदी की तरह बालों में (केशों) में लेप लगाते रहें। तीन चार दिन में बाल स्याह (काले) हो जाते हैं तथा चमकीले बाल बढ़ते हैं।

अंग्रेजी खिजाबों की भाँति यह लेप दिमाग को नुकसान नहीं पहुँचाता और आँखों को गर्मी नहीं पहुँचाता बल्कि नेत्र ज्योति, मानसिक शक्ति, स्मरण शक्ति को बढ़ाता है तथा मस्तिष्क व नेत्रों में तरी बढ़ाता है।
(२३) अतिसार (न रुकने वाले दस्त) पर सूखा आँवला १० ग्राम, छोटी हरड़ ५ ग्राम, दोनों को बारीक पीस कर एक-एक ग्राम की मात्रा में प्रातः सायं पानी के साथ फंकाएँ। दस्त बंद करने के लिए अत्यन्त सरल और अचूक औषधि है।
(२४) आँवले के कोमल पत्तों को पीसकर मट्ठे (छाछ) के साथ देने से अजीर्ण (अपच) और अतिसार (दस्त) में लाभ होता है। इसके सूखे फलों में गेलिक एसिड की मात्रा काफी (पर्याप्त) रहती है। इस कारण यह रक्तातिसार (खूनी दस्त), अर्शरोग (बवासीर) और रक्त पित्त (नकसीर) की बीमारियों में खासतौर से उपयोगी है।
(२५) आँवलों को भलीभाँति पीसकर एक मिट्टी के बरतन में लेप कर देना चाहिए। फिर उस बर्तन में छाछ (मट्ठा) भरकर उस छाछ को रोगी को पिलाने से बवासीर में लाभ होता है।
(२६) रक्तातिसार (खूनी दस्तों) पर-आँवले का रस शहद, घी और दूध के साथ देना चाहिए।
(२७) मूत्र कृच्छ या गर्मी पर आँवले के रस और गन्ने के रस को मिलाकर पिलाना चाहिये।
(२८) आँवले के २० ग्राम स्वरस में इलायची का चूर्ण भुरभुराकर पीने से मूत्रकृच्छ मिटता है।
(२९) आँवले का चूर्ण जल में मिलाकर पिलाने से और उसी जल की मूत्रेन्द्रिय में पिचकारी देने से सुजाक की जलन शांत होती है और धीरे-धीरे घाव भर कर पीप आना बंद हो जाता है।
(३०) आँवले को घोंटकर शक्कर मिलाकर पीने से मूत्र के साथ खून आना बंद हो जाता है।
(३१) प्रमेह पर-आँवले के रस या सूखे आँवले के काढ़े में लगभग दो ग्राम पिसी हल्दी और शहद डालकर देना चाहिए।
(३२) शहद और आँवले का रस समभाग लेकर पीने से 'प्रमेह' का शमन होता है।
(३३) आँवले का चूर्ण एक ग्राम, काले जीरे का चूर्ण एक ग्राम, मिश्री दो ग्राम, तीनों को मिलाकर फाँक लें और ऊपर से थोड़ा सा ठण्डा जल पी लें। शय्या मूत्र रोग (बिस्तर में पेशाब करने का रोग) नष्ट होता है।
(३४) आँवले सूखे, काला जीरा समभाग लेकर कपड़छन कर लें। प्रतिदिन प्रातः सायं तीन ग्राम औषधि शहद के साथ चटाएँ। इससे 'शय्या मूत्र' का रोग नष्ट हो जाता है।
(३५) बनारसी आँवले (उत्तम मोटा वाला) का मुरब्बा एक नग, प्रतिदिन पानी से अच्छी प्रकार धोकर चबा-चबाकर खाएँ। अपने गुणों में अद्‌भुत है। कैसा ही भयंकर स्वप्नदोष होता हो, कुछ दिन के सेवन से भाग जाता है।
आँवला रसायन है। वीर्य विकारों के अतिरिक्त यह हृदय, मस्तिष्क और नेत्र रोगों में भी अत्यन्त लाभदायक है।
(३६) आँवले के बीजों को पानी में एक साथ पीसकर उस पानी को छानकर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीने से श्वेतप्रदर में लाभ होता है।
(३७) सूखे आँवले ३ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम, यह एक खुराक है। दोनों को कूट पीसकर चूर्ण बना लें और प्रातः सायं दोनों समय जल के साथ सेवन कराएँ। यह प्रयोग 'प्रदरान्तक' है।
(३८) आँवले के रस में शक्कर और शहद मिलाकर पिलाने से योनिदाह (भग की जलन) में अत्यन्त लाभ होता है।
(३९) वीर्यवृद्धि के लिए-आँवले के रस को घी में मिलाकर देना चाहिए।
(४०) नवयौवन के लिए- आँवले का चूर्ण ५०० ग्राम लेकर इसमें इतना आँवले का रस डालें कि चूर्ण पूरी तरह गीला हो जाए। फिर इसे खरल में डालकर घोटें। जब रस घोटते-घोटते बिल्कुल सूख जाय तब फिर आँवले का रस डालकर तर कर लें और फिर घोटें। इस प्रकार इक्कीस बार ऐसा करें फिर औषध तैयार है। इस चूर्ण का प्रयोग छः से १० ग्राम तक ताजा गोदुग्ध के साथ करें। इसके सेवन से वृद्धावस्था दूर होकर शरीर में नवयौवन पैदा होता है।
(४१) वृद्ध न होने के लिए-सूखे आँवले को पानी में पीस कर शरीर पर लगायें और थोड़ी देर पश्चात् स्नान कर लें। नित्य प्रति इस नियम का पालन करने से शरीर पर झुर्रियाँ नहीं पड़तीं और केश सफेद नहीं होते। ❐❐❐

जानते हो!

❐आस्था

❍कीटों में मनुष्यों की तरह सांस लेने के लिए फेफड़े नहीं होते, ये धड़ के चारों ओर स्थित छोटे छोटे छेदों की मदद से सांस लेते हैं।

❍गिरगिट की जीभ, जिससे यह शिकार पकड़ता है, इसके धड़ से दो गुणी लम्बी होती है।

❍वन्य जीवों में केवल हाथी ही एक ऐसा जानवर है जिसे सिर के बल खड़े होने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

❍शरीर के कुछ संवेग ३०० फुट प्रति सेकेंड की गति से यात्रा करते हैं और कुछ अन्य संवेग डेढ़ फुट प्रति सेकेंड की धीमी गति से।

❍घड़ी में सबसे पहले प्रयुक्त होने वाला वाल स्प्रिंग सुअर के बाल का बना था।

❍मनुष्य को साधारण घरेलू मक्खी से ३० विभिन्न बिमारियाँ हो सकती हैं।

❍आधे चांद से पूरा चांद नौ गुणा ज्यादा चमकदार होता है।

❍घोंघा बिना घायल हुए ब्लेड की धार पर चल सकता है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रेषक : हर्षित आर्य कक्षा पांच,
इण्डस पब्लिक स्कूल, मिर्चपुर

☺पत्रकार (कवि से) आपको कवि सम्मेलन में भाग लेने से क्या कुछ मिलता है?

कवि (दु:खी मन से) सड़े टमाटर, टूटे जूते व अंडे वगैरा--

☺एक सहेली दूसरी से मिलने गई। वहां उसका छोटा बेटा खेल रहा था। वह मुन्ने को देख कर बोली, 'वाह मुन्ने ने तो तुम्हारी ही आंखें पाई हैं और नाक अपने पापा जैसी पाई है। बड़ा मुन्ना पास ही खेल रहा था। वह झट से बोला- 'और कमीज उसने मेरी पाई है।'

☺अजनबी ने सिपाही से पूछा- 'जनाब यहां जगह-जगह पर यह क्यों लिखा है कि गाड़ी धीरे चलाएं!'

सिपाही-'क्योंकि यहां दूर-दूर तक अस्पताल नहीं है।'

☺ग्राहक- चूहे मारने की दवाई है?

दुकानदार- 'जी हां, यह लीजिये।'

ग्राहक-'चूहे मारने का पाप तुम्हें लगेगा या मुझे।'

दुकानदार- 'किसी को भी नहीं--

ग्राहक-वह कैसे?

दुकानदार (मुस्करा कर) -चूहे मरेंगे तब न!

☺बेटा- पिताजी, रात को मुझे सपना आया कि मेरे पांव में कांटा चुभ गया।

पिता- अच्छा, तो अब तुम जूते पहनकर सोया करो।

बाल वाटिका

प्रहेलिका:

चार पांव पर चल न पाऊं,बिना हिलाए हिल न पाऊं,
देती हूं सबको आराम, बताओ तो क्या है मेरा नाम?

आग लगे पानी बन जाऊं, फिर छमछम मैं नीर बहाऊं,
आग लगे ज्यों मेरे दिल में, अधियारों में राह दिखाऊं।

अंधा मुझको देख है सकता, सुन सकता है बहरा,
रात पड़े आ जाता हूं मैं, जाता हूं जब हो सवेरा।

रथ के तो मैं आगे रहता पीछे रहता मोटर के,
अता पता मेरा पूछो तो, बीच में रहता मेरठ के।

तीन नेत्र, पर शंकर नहीं, जटा है पर योगी नहीं,
दूध है, पर गाय नहीं, बता दो तो मूर्ख नहीं।

एक नारी के दो बालक, दोनों का एक ही रंग,
एक घूमे, एक खड़ा रहे, फिर भी दोनों संग।

आग जले मेरे ही दम से, हर इंसान के आती काम।
दिन में पौधे मुझे बनाते अब बतलाओ मेरा नाम।

देने से घटती नहीं, करिये जीभर दान।
छीने से छिनती नहीं, देते बढ़ता मान।।

कुर्सी, मोमबत्ती, स्वप्न, र, नारियल, चक्की, ऑक्सीजन, विद्या

विचार कणिका:

❐प्रतिभा

❍विद्वान् होना ही काफी नहीं, अच्छा इन्सान होना भी जरूरी है।

❍मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

❍सृजन में संघर्ष निहित है।

❍कर्त्तव्य बुद्धि के द्वारा स्वार्थ बुद्धि का नियंत्रण होना चाहिए।

❍साहसी व्यक्ति कभी भी बुरा काम नहीं करता।

❍जैसा तुम्हारा लक्ष्य होगा वैसा ही तुम्हारा जीवन भी होगा।

❍कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है।

❍शुरुआत किसी भी कार्य का मुश्किल चरण है।

❍सफलता के लिये स्वयं रास्ता तय करना पड़ता है।

❍संकट में भी अवसर छिपा होता है।

❍विचारों से ही व्यक्ति की पहचान होती है।

माँ का मन

–विनोबा

एक स्त्री के पांच बेटे थे। वह अपने पांचों बेटों को बहुत मानती थी। उसके बेटे भी आपस में बहुत प्रेम से रहते थे। एक दिन पांचों बेटे खेलने निकले। उनमें से एक कहीं खो गया। रात हो गयी, फिर भी वह नहीं आया। माँ परेशान हो उठी। वह निकल पड़ी ढूंढ़ने। उसने आसपास हर जगह ढूंढ़ा। लेकिन उसका कहीं पता न चला। निराश होकर वह घर लौट आई। फिर उसने चारों बेटों को ढूंढ़ने के लिए भेज दिया। उन्होंने भी बहुत ढूंढ़ा लेकिन उसका कहीं पता न चला। दूसरा दिन आया, चला गया। तीसरा दिन भी आया और चला गया। लेकिन खोए हुए बच्चे का कहीं पता न चला। माँ रात दिन उस बच्चे का नाम ले ले कर रोती रहती। घर में एक अजीब उदासी छाई रहती। चारों भाईयों को भी भाई के खो जाने का बहुत दु:ख था। आखिर एक दिन वह लड़का मिल गया। माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। माँ की प्रसन्नता देखकर उसके चारों बेटों ने पूछा–'हम चारों तुम्हारे पास थे। तब तुम्हें इतनी खुशी नहीं थी माँ, जितनी अब है। इसका कारण क्या है? क्या तुम पक्षपात करती हो?

माँ ने जवाब दिया– मेरे प्यारे बेटो, इसमें पक्षपात नहीं, माँ की ममता है। अभी तुम लोग माँ का दिल नहीं पहचानते। तुम चारों मेरे पास थे तो सुखी थे। लेकिन भूला हुआ बेटा तो मेरे पास था नहीं; इसलिए वह दु:खी था। उसका दु:ख दूर किए बिना मुझे संतोष कैसे मिलता?

महानता की नींव

महाराष्ट्र के एक गांव में प्राथमिक स्कूल में अध्यापक बच्चों को पढ़ा रहे थे। अचानक उन्होंने प्रश्न किया –यदि तुम्हें रास्ते में एक हीरा मिल जाये तो तुम उसका क्या करोगे?

'मैं इसे बेचकर कार खरीदूंगा।' एक बालक ने कहा

एक ने कहा–'मैं इसे बेचकर धनवान बन जाऊँगा।'

तीसरे ने कहा–'मैं इसे बेचकर देश–विदेश की यात्रा करूँगा।'

चौथे बालक ने कहा कि मैं उस हीरे के मालिक का पता लगाकर लौटा दूंगा।

अध्यापक ने फिर पूछा–'खूब पता लगाने पर भी मालिक न मिला तो?'

इस पर बालक ने कहा कि तब मैं हीरे को बेचकर सारा पैसा देश की सेवा में लगा दूंगा। बालक का उत्तर सुनकर शिक्षक गद्‌गद् हो गये और बोले–'शाबाश, तुम बड़े होकर बहुत बड़े आदमी बनोगे।'

शिक्षक का वचन सत्य सिद्ध हुआ। यही बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध महापुरुष बना। सच है महानता की नींव तो बचपन में ही बन जाती है।

बुद्धिमान बच्चे शाकाहारी होते हैं।

साउथेम्पटन विवि के एक शोध में यह पाया गया है कि जिन बच्चों का आइ क्यू स्तर बेहतर होता है, वे बड़े होने पर ज्यादातर शाकाहारी होते हैं। शोधकर्त्ताओं ने ८७१९ लोगों में अध्ययन कर यह निष्कर्ष दिया है। यह पाया गया कि ३० वर्ष की आयु के जो लोग शाकाहारी हैं उन सभी का आईक्यू १० वर्ष की अवस्था में औसत बच्चों से पांच अंक ज्यादा था। हालांकि उनके अनुसार बेहतर आई क्यू का संबंध कुछ हद तक अच्छी शिक्षा और उच्च व्यावसायिक सामाजिक स्थिति से भी ह, लेकिन वैज्ञानिक इस बात से आश्वस्त हैं कि शाकाहार और बुद्धिमत्ता स्तर में गहरा संबंध है। (सीनियर इण्डिया)

छोटी चिड़िया–सुधीर मित्तल

इधर उधर क्यों घूमे चिड़िया
क्या–क्या सोच रही है चिड़िया
काट दिये क्यों सारे पेड़
कहां रहेगी अब ये चिड़िया
ठंडी शीतल छाया में

हर दिन सोई जागी चिड़िया
अपनी सखी गिलहरी के संग
पत्ते–पत्ते उछली चिड़िया
कहां गये वे सारे पेड़
हरा–भरा सा गहरा जंगल
कहां बनेगा मेरा घर
सोच रही है छोटी चिड़िया

भजनावली

पूज्य गुरुदेव स्वामी भीष्म जी आर्योपदेशक

❑रमेश कुमार आर्य भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट काबड़ी जिला पानीपत 08906801

तर्ज : मुर्दा फूकण आली बता तू कौन लुगाई सै।

भारत के कवियों में शिरोमणि पदवी पाई है।
स्वामी भीष्म जी ने कैसी धूम मचाई है।।
सन १८ सौ ६२ में जन्म लिया ब्राह्मण के घर।
माता पार्वती पिता थे बारूराम पांचाल विप्र।
हरियाणे में ग्राम तेवड़ा जनपद है कुरुक्षेत्र।।

होनहार बिरवां के चिकने पात कहें नर नारी।
कायर कमजोर पिटे वीरों की बात कहें नर नारी।
जो ब्रह्म के घर की जाणै ब्राह्मण जात कहें नर नारी।।
वेद से ज्ञान, ज्ञान से ही होती कविताई है।।
सर्वश्रेष्ठ कवियों में हो गई कला सवाई है।।१।।

उदासी महात्मा से जवानी में संन्यास लिया।
इंद्रिय छेदन कर गुरु की प्रतिज्ञा को पास किया।
मौत से भी खेले हंसकर सोचो कितना साहस किया।

लालसिंह से भीष्म बने तप और कष्ट सहन किया।
वेदांत के ग्रंथ पढ़े संस्कृत का अध्ययन किया।
धुन के धनी धुरेंद्र रात दिन ना चैन किया।।
मोह माया को त्याग शांति दिल में समाई है।
शील, सबर, संतोष श्रद्धा शर्म सच्चाई है।।२

विचार सागर, वृत्तिप्रभाकर, कौमुदी पढ़ने लगे।
तत्त्वानुसंधान पंचदशी अष्टाध्यायी में बढ़ने लगे।
शुक्ल पक्ष चंदा की ज्यों ऊँचे ही चढ़ने लगे।

ज्ञानीराम युवक ने जब सत्यार्थप्रकाश दिया।
प्रामाणिक ग्रंथ से भ्रम अविद्या का नाश किया।
रामायण और महाभारत का पढ़ सारा इतिहास लिया।
वेद शास्त्र पढ़े ऋषिकेश में जो तपोभूमि कहाई है।
उत्तराखंड पहाड़ों से बहती गंगा माई है।।३

उत्तर प्रदेश जिला मेरठ करहेड़ा के पास रहे।
चंद्रशेखर बिस्मिल भगतसिंह क्रांतिकारी खास रहे।
रामचंद्र विकल, लाल बहादुर कर श्रद्धा विश्वास रहे।
दिल्ली में ही स्वामी रामेश्वरानंद जी से मेल हुआ।
घरौंडा में गुरुकुल बना एमपी बने खेल हुआ।
आजादी के लिए कई बार जाना जेल हुआ।।
ज्ञानेंद्र के गाने ने सब बात भुलाई है।
स्वामी जी ने कविता में सब को धूल चटाई है।।४

घरौंडा में रहकर फिर भीष्म भवन बनवाया था।
२२८ इतिहास लिखे ज्ञान भंडार रचाया था।
ज्योतिस्वरूप मुनीश्वर देव, सुन रामकिशन भी आया था।

उन्हीं के शिष्य रतीराम, पंडित ताराचंद हुए।
नत्था सिंह, श्रीपाल, हरिदत्त प्रेरणा स्तंभ हुए।
पंडित चंद्रभानु की कविता सुनकर आनंद हुए।
लिखने में कमाल किया कला की चतुराई है।
श्री ब्रह्मानंद ने योग धर्म की राह दिखाई है।।५।।

शहीदों के जीवन वीर क्षत्रियों के इतिहास लिखे।
युग दृष्टा दूरदर्शी महर्षि दयानंद खास लिखे।
चिंतन मनन स्वाध्याय करके योगाभ्यास लिखे।।

इंदिरा गांधी ज्ञानी जैल सिंह ने अभिनंदन किया।
सम्मान पेंशन बांध दई और चरणों में वंदन किया।
कुरुक्षेत्र में सभा बीच जनता ने धन्य धन्य किया।
हो कवि साधु का सम्मान देश में खुशी मनाई है।
त्याग भाव से प्रचार किया ना करी कमाई है।।६

संयमी सदाचारी तप और विद्या से भरपूर था।
संतोषी निर्मोही राग द्वेष से कोसों दूर था।
ज्ञानी गुणी गंधर्व ईश भक्त भी जरूर था।

दया के सागर प्रेमी आनंद के भंडार थे।
निर्भय वक्ता स्पष्ट वादी जोशीले प्रचार थे।
८ जनवरी १९८४ को प्राण निकले बाहर थे।
रविवार दिन 'रमेश' देश ने गम सी खाई है।
बने मुक्ति के मेहमान ज्ञान की ज्योति जलाई है।।७

शुद्धि, दान व यज्ञ का पर्व है मकर संक्रांति

नई दिल्ली, शरीर व मन की शुद्धि, दान, यज्ञ व वंचितों की सेवा कर उन्हें गले लगाने का महान पर्व है मकर संक्रांति। दक्षिणी दिल्ली के ईस्ट ऑफ कैलाश स्थित आर्यसमाज संतनगर में आयोजित भव्य मकर संक्रांति उत्सव में बोलते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विनोद बंसल ने कहा कि सम्पूर्ण भारत में कहीं लोहड़ी, कहीं उत्तरायण, कहीं माघ साजी, कहीं पौष-संक्रांति, कहीं पोंगल, कहीं बिहू, कहीं मकराविलक्कू तो कहीं मकर संक्रांति जैसे विविध नामों से अलग-अलग प्रकार से मनाए जाने वाले इस महान पर्व के अवसर पर गुड़, तिल, गजक व खिचड़ी का सेवन भी विविधता में एकता का ही एक विशेष संदेश देता है। इस अवसर पर वैदिक विदुषी दर्शनाचार्या श्रीमती विमलेश आर्या ने उपस्थित जन-समूह को यज्ञ में आहूतियां समर्पित करवा कर यज्ञोपदेश करते हुए कहा कि लोहड़ी बृहद् यज्ञ का ही एक रूप है जिसमें शरदऋतु में आये नवान्न गुड़ तिल मक्का आदि से बने मिष्ठान की आहुति हवन सामग्री में मिला कर दी जाती है। यज्ञ= देव-पूजा, संगतिकरण और दान करते हुए अभावग्रस्त लोगों को पुण्य कार्यों में शामिल कर उनकी आवश्यकता की वस्तुएं वितरण करके ही लोहड़ी या मकर संक्रांति जैसे पर्व को सार्थक किया जा सकता है। यज्ञ के उपरांत आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री वीरेंद्र सूद, राज सूद, श्रीमती चौहान, पार्वती, निम्मी व हितेश के अतिरिक्त कुमारी अनीता मोहिनी के समूह गान तथा अर्शदीप सिंह, जस्नूर कौर, दक्ष व नील नामक नन्हे-मुन्ने बच्चों की सुमधुर प्रस्तुति ने उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

-विनोद बंसल (राष्ट्रीय प्रवक्ता) विश्वहिन्दू परिषद्

शांतिधर्मी परिसर नरवाना मार्ग जींद में

पूर्णिमा यज्ञ महोत्सव

9 फरवरी, 2020 रविवार सायं 3-00 बजे

❖यज्ञ ❖भजन ❖प्रवचन

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

वैदिक प्रचार समिति

सम्पर्क : 9996338552, 9896412152, 9416253826

यज्ञ, भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह

झज्जर, मकर संक्रांति पर्व पर अभिनन्दन समारोह महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, मौहल्ला भट्ठी गेट, झज्जर में हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा रिटायर्ड फ्लाईंग ऑफिसर महावीर सिंह आर्य तथा मुख्य वक्ता रिटायर्ड कॉलेज प्राचार्य डॉ० एचएस यादव रहे। मुख्य यजमान श्रीमती मामकौर एवं महाशय रतिराम आर्य रहे। यज्ञ समिति झज्जर के लगभग ४० होनहार विद्यार्थियों को वस्त्रों से सम्मानित किया गया। श्री महावीर सिंह आर्य ने घर में सुख-शान्ति के लिए पांच महायज्ञों का पालन करने की प्रेरणा दी। निराकार ईश्वर की उपासना करना ब्रह्मयज्ञ है। पर्यावरण की शुद्धि के लिये हवन करना देवयज्ञ है। जीवित माता-पिता, बुजुर्गों का सम्मान व सेवा करना पितृयज्ञ है। पशु-पक्षी, विकलांग, अनाथ, विधवा आदि की मदद करना बलिवैश्वदेव यज्ञ है। सदाचारी विद्वान द्वारा दिये गये उपदेश को ग्रहण करना अतिथियज्ञ है। डॉ० एच० एस० यादव ने कहा कि माता-पिता की असली सम्पदा संतान होती है। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर ही उनके भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। माता-पिता अपने आचरण से संतानों के अन्दर अच्छे संस्कार आसानी से डाल सकते हैं। प्राध्यापक द्वारकादास ने आर्यों के अन्दर कथनी व करणी में एकरूपता की बात कही तथा लाला प्रकाशवीर आर्य ने आर्यसमाज के सत्संगों में बढ़ चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा की। पंडित जयभगवान आर्य, श्री भगवान सिंह, दलिप आर्य तथा मास्टर पनसिंह ने महर्षि दयानन्द संबंधी भजन तो अध्यापिका सुमित्रा ने ईश्वर भक्ति का भजन सुनाया। बालक अनमोल ने विद्यार्थी की सफलता में मन की एकाग्रता को रेखांकित किया। मंच का संचालन श्री मुकेश आर्य ने किया। श्री जयप्रकाश राठी, ओमप्रकाश यादव, कृष्ण शास्त्री, उद्यम सिंह, कान्ता, सुरेश, सेवा, सोनिया, पुष्पा आदि गणमान्य महिला-पुरुष उपस्थिति रहे। सुभाष आर्य ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। (सुभाष आर्य)

मास्टर रायसिंह आर्य दिवंगत

जींद, स्वामी रामेश्वरानंद जी (पूर्व नाम मास्टर रायसिंह) का गत दिवस निधन हो गया। २० दिसम्बर को उनके पैतृक गांव घोघड़ियां में मंत्रोच्चार के साथ अंतिम संस्कार किया गया। मुखाग्नि उनके बेटे सज्जन कुमार ने दी। मास्टर रायसिंह जी ने अपने जीवन में समर्पण भाव से आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए कार्य किया। उन्होंने स्वामी रत्नदेव जी के साथ मिलकर गुरुकुल खरल व कुम्भाखेड़ा के उन्नयन में भी अपना योगदान किया। आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रस्तोता और जिला वेदप्रचार मण्डल के प्रधान रहे। अध्यापन काल में विद्यालयों में प्रचार कराने में उनकी विशेष रूचि रहती थी। उनके निधन से इस क्षेत्र में एक अपूरणीय रिक्तता पैदा हो गई है। उनके निधन पर स्वामी रामवेश जी महाराज, स्वामी धर्मदेव जी, प्राचार्य अजित गौतम, देवेन्द्र आर्य, दलशेर लोहान प्राचार्य, बिजेंद्र आर्य, प्राचार्य जगफूल ढिल्लों, रघुबीर बूरा, बीरेंद्र बूरा सहित प्रबुद्ध समाजसेवियों व ग्रामवासियों ने गहरा दु:ख व्यक्त किया। (जगफूल ढिल्लों)

दानवीर राव हरिश्चन्द्र आर्य दिवंगत

आर्यजगत् के पुरोधा और आर्य सम्मान पुरस्कारों द्वारा प्रतिवर्ष अनेक विद्वानों को प्रभूत धनराशि से सम्मानित करके आर्यजगत का गौरव बढाने वाले नागपुर महाराष्ट्र के प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति राव हरिश्चंद्र आर्य जी का निधन दिनांक २४ दिसम्बर को नागपुर में हो गया। उनका अन्तिम संस्कार २५ दिसंबर को उनके पैतृक गांव बीघोपुर नजदीक नांगल चौधरी जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) में किया गया। अनेक समाज सेवकों ने उनके निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त किया है। राव साहब ने हरयाणा में जन्म लेकर एक नौकरी के माध्यम से प्रभूत आर्थिक और सामाजिक उन्नति की। दान की उदार प्रवृत्ति सदैव बनी रही। सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़कर भाग लेते रहे। सामाजिक प्रतिष्ठा पाकर भी अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। राव साहब एक उज्ज्वल, प्रेरक व्यक्तित्व के धनी थे। आर्य संन्यासियों और विद्वानों का उन्हें भरपूर सम्मान प्राप्त था। सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए उन्का निधन एक भारी क्षति है। (निस)

हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आर्यों की
गोत्र परम्परा का वैज्ञानिक विश्लेषण

लेखक : महीपाल आर्य

पृष्ठ : ४८

मूल्य २० /- लागत मात्र

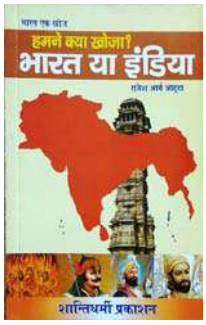

भारत एक खोज
हमने क्या खोजा?
भारत या इण्डिया

लेखक :
राजेशार्य आट्टा

पृष्ठ : ९०

मूल्य ४० /- लागत मात्र

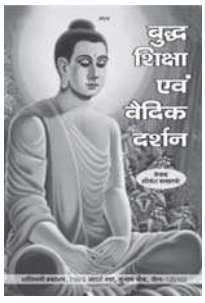

बुद्ध शिक्षा एवं वैदिक धर्म

लेखक : हरिवंश वानप्रस्थी

पृष्ठ : ८८

मूल्य लागत मात्र २०/-

देव गीत

(स्तुति, प्रार्थना और प्रेरणा गीतों का अनुपम संग्रह)

लेखक : सहदेव समर्पित

पृष्ठ : ५०

मूल्य २०/- लागत मात्र

चारों पुस्तकों का मूल्य एक सौ रुपये अग्रिम भेजकर पंजीकृत डाक से मंगावें।
रजिस्टरी शुल्क हम वहन करेंगे।

पुस्तक मंगाने व अग्रिम राशि जमा कराने के लिये खाता नं० हेतु सम्पर्क करें- व्हाट्स एप- 9996338552
या पत्र व्यवहार करें- : शांतिधर्मी कार्यालय, पोस्ट बॉक्स नं० 19, मुख्य डाकघर जींद-126102

शास्त्रार्थ

ध्यान–उपासना की आर्ष पद्धति पर चर्चा

11–12 फरवरी २०२० को आर्यवन रोजड़ में

रोजड़ के उपदेशकों/लेखकों ने ध्यान–उपासना की आर्ष पद्धति का मार्च २०१२ में निर्माण किया था। इसके अंतर्गत एक साधक ध्यान के समय ईश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव का विचार करता है। जब कि मैं पातञ्जल योग–दर्शन और तज्जनित ध्यान–उपासना पद्धति' की शिक्षा देते समय छात्रों को दो चरण बताता हूँ : 1) विचारशीलता से विचारशून्यता 2) चित्तवृत्ति का निरोध। अतः मुझे उनकी विधि दोषपूर्ण लगी कि वह पतञ्जलि कृत योग दर्शन से मेल नहीं खाती है। मैंने तुरन्त अप्रैल २०१२ में उन्हें पत्र द्वारा ऐसा बताया। उसके बाद मुझे उनकी विधि को कार्य–रूप में देखने का अनेकशः अवसर मिला और आर्य समाज ह्यूस्टन में साक्षात् भी देखा। फरवरी २०१९ में पुनः दूसरा पत्र लिखा जिसमें सात आक्षेपों का उल्लेख किया। मुझे सूचित करते हुए हर्ष है कि उस पत्र–व्यवहार की परिणति एक लाभकारी संवाद के रूप में हुई जिसका परिणाम वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में 11–12 फरवरी २०२० को जाना जायेगा।

संवाद विषय : आर्य समाज की ध्यान–उपासना पद्धति में ईश्वर का चितंन/विचार करना चाहिए (करना उचित है) या नहीं?

प्रथम पक्ष : रोजड़, जिसका प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से आचार्य सत्यजित् जी करेंगे। आचार्य आनंद प्रकाश जी भी प्रस्तुत होंगे।

प्रथम पक्ष का प्रतिज्ञा वाक्य :

आर्य समाज की ध्यान–उपासना पद्धति में ईश्वर का चिन्तन/विचार करना चाहिए (करना उचित है)।

द्वितीय पक्ष : डॉ० हरिश्चंद्र जी, (आर्य समाज, ग्रेटर ह्यूस्टन, USA)

द्वितीय पक्ष का प्रतिज्ञा वाक्य :

आर्य समाज की ध्यान–उपासना पद्धति में ईश्वर का चिन्तन/विचार नहीं करना चाहिए (करना उचित नहीं है)।

दोनों पक्ष प्रमाणों के आधार पर संवाद करेंगे, अपनी बात सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।

निर्णायक मंडल :

इस प्रक्रिया के संचालन के लिए एक 5 सदस्यीय निर्णायक मंडल का गठन दोनों पक्षों की सहमति से किया गया है। निर्णायक मण्डल अपना निर्णय 12 की सायं या 13 को प्रातः सुनायेगा।

मुझे आशा है कि एक ऐसी विधि को हम शीघ्र ही प्राप्त कर लेंगे जो महर्षि दयानन्द को अभीष्ट होती, जो ५००० वर्षों के पश्चात धरा पर आने वाले ऋषि थे और उच्च कोटि के योगी–उपासक थे।

आप इस चर्चा को साक्षात् अवश्य देखें। सम्पर्क करें :– http://vaanaprastharojad.org/Index.html

Address:
VAANPRASTHA SAADHAK AASHRAM, Aryavan, Rojad,
P.O. - Sagpur, Dist- Sabarkantha, State Gujarat - 383307
Phone: +91 (02770) 287417, 291555, 9427059550
E-mail: vaanaprastharojad@gmail.com

(आचार्य, डॉ०) हरिश्चन्द्र
आर्य समाज ह्यूस्टन (सं० रा० अमेरिका)

प्रो० शत्रुञ्जय रावत
संयोजक : संवाद प्रक्रिया
(प्राध्यापक, IIIT हैदराबाद)
Email: shatrunjayrawat@gmail.com

हमारा धर्म (पृष्ठ १२ का शेष)

जीवन बनाने के लिए अथक एवं भरसक प्रयत्न करें।

आप चाहे किसी भी धर्म एवं संप्रदाय में विश्वास करने वाले हों, किसी भी जाति या कौम के हों, नैतिकता और सदाचार को अपनाना सभी के लिए आवश्यक है। इसके बिना जीवन अशांत रहता है। आज हम सभी देख रहे हैं। शान्ति लाने के लिए हिंसा का सहारा लिया जा रहा है। सभी देश विषैले तथा विनाशकारी हथियारों का निर्माण करने में जुटे हुए हैं। नर-संहार भी होता रहा है। जैसे प्रथम विश्व-युद्ध तथा द्वितीय विश्व-युद्ध में नर-संहार देखा जा चुका है। परन्तु शान्ति का नामोनिशान नही है, उलटी अशान्ति ही अशान्ति बढ़ती रही है। आपसी द्वेष बढ़ा है और एक दूसरे को नष्ट करने की भावना जागी है। मैं आप सबको यह बता देना चाहता हूँ कि जितना सहारा हिंसा को जग में आज तक मिला हैं, उतना यदि अहिंसा को मिल गया होता, तो संसार का नक्शा ही बदल जाता, लोगों के वारे-न्यारे हो जाते, उलझनें सुलझती चली जातीं। मैत्री और भाई-चारे का भाव जाग गया होता। आपसी द्रोह का निशान तक बाकी नहीं रहता।

हम सब यह देख रहे हैं कि आज बुद्धिवादी युवक धर्म के नाम से घृणा करने लगा है। क्या वह अपने जीवन में सुख तथा शान्ति का पक्षधर नही हैं? यदि वह जीवन में सुख और शान्ति लाना चाहता है तो उसे धर्म से घृणा नहीं होनी चाहिए। सत्य, अहिंसा, बंधुत्व, संतोष, आवश्कता से अधिक धन संग्रह न करना आदि-आदि धर्म के ऐसे तत्व हैं जिनसे किसी भी धर्म को मानने वाला इंकार तो कर ही नहीं सकता और ऊपर कहे गए तत्वों को जो अविश्वास की नजर से देखता है, वह मत या धर्म कहलाने का अधिकारी नहीं है। धर्म से घृणा करने का कारण धार्मिक लोगों का पाखण्ड से भरा जीवन है। पाखण्ड में विश्वास करने वाले लोग धर्म के मूल तत्वों को भूल गए और आडम्बर को महत्व देने लगे। यही स्थिति दुर्भाग्य का कारण है। जब तक इस स्थिति को बदला नहीं जाता तब तक धर्म को वास्तविक प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। मैं सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों से यह पुरजोर अपील करता हूँ कि आप सच्चे अर्थों में धार्मिक बनें। जीवन में सत्य-अहिंसा को अपनाएं, पवित्रता का जीवन व्यतीत करें। उच्च और सात्विक विचार, सदाचार, संयम और अनुशासन, ये जीवन की मर्यादाएं हैं। मर्यादित जीवन पतन की तरफ नहीं जाता। वह पूर्णरूपेण सुरक्षित रहते हुए स्वयं के लिए मंगलकारी होता है तथा अन्य के लिए भी मंगल ही मंगल करने वाला सिद्ध होता है।

जिज्ञासा (पृष्ठ १४ का शेष)

उसके शोषण का कारण बन जाए तो फिर दोनों को अंधकूप में जा गिरने के अतिरिक्त और भला क्या रह जाता है! ऐसे शोषक जनों का एक वर्ग पूरे योजनाबद्ध और चालाकीपूर्ण छल-कपट का आश्रय लेते हुए समाज को रोगी, अपंग और विवेकशून्य बनाकर अपना और अपने शिष्यों का विनाश करने में लगा हुआ है। यह कार्य उस समय और भी अधिक विकट हो जाता है जब इसे धार्मिक विश्वासों के साथ जोड़ दिया जाता है। धर्म के नाम पर, आस्था के नाम पर, श्रद्धा के नाम पर और भक्ति के नाम पर आज जितना भी पाखंड दिखाई देता है वह इसी शोषण का प्रतिफल है। विचार करके उत्तर दीजिए कि किसी कथित धर्मस्थल पर कोई मनुष्य जिज्ञासा लेकर जाता है या स्वार्थ से पूरित कामना? आपका उत्तर हमारी बात का समर्थन करेगा। वहां पर जानने की अभिलाषा तो किसी के मन में तनिक भी नहीं है। वहां तो प्राप्त करने की इच्छा है। जानना कुछ नहीं। जानकर प्रयत्न और पुरुषार्थ कुछ भी नहीं! और प्राप्त करने की चाहना का कोई अंत नहीं-- तो हमारी समझ में इससे क्रूर और काला पृष्ठ मानव समाज का और कुछ भी नहीं हो सकता। यहीं से सारे अपराध, पाप, शोषण, क्लेश और वैर विरोध उत्पन्न होते हैं। यही इन अनर्थों का मूल है। याद रखिए, जो व्यक्ति किसी श्रद्धालु की बुद्धि को गिरवी रखवा कर उसका मार्गदर्शक बनना चाहता है तो वह तो एक अति विकराल विषधर के समान है। जो तर्क-वितर्क को कोई स्थान देता ही नहीं, विद्या से जिसका कोई दूर-दूर तक संबंध नहीं, परोपकार की भावना नहीं-- ऐसा व्यक्ति जब गुरु, नेता या अग्रणी बनकर काम करेगा तो क्लेश के अतिरिक्त और क्या देगा? ❐❐❐

त्वदीयं वस्तु (पृष्ठ ८ का शेष)

इस पर कोई स्वत्त्व नहीं है। आहुति अग्नि ही की देन थी और अग्नि ही की भेंट कर दी। इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है। सफलता की कसौटी है सच्चा व्यवहार, सो यजमान को प्राप्त है। यज्ञ वह स्वर्यसिद्ध सफलता है जिसे और फल की अपेक्षा ही नहीं है। बे-फल की सफलता क्या सुन्दर सफलता है।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द! तुभ्यमेव समर्पये।

अग्नि-देव! फल भी तुम्हारा, यज्ञ भी तुम्हारा। मैं कौन हूँ जो इन्हें एक दूसरे से पृथक् करूँ? तुम मेरे इस बे-फल के यज्ञ को उसकी निष्फलता में ही सफल कर दो। अग्नि-देव ! मेरा फल तुम हो। सुन्दर फल, सुहावना फल, उज्ज्वल निर्मल फल, जाज्वल्यमान फल। ❐❐❐

कैसे भवसागर (पृष्ठ २३ का शेष)

फिर दु:ख दु:ख ही नहीं रहता, वह तो परम प्यारे का प्रेम कटाक्ष हो जाता है।

डूबब जर्व न बात कछु तैं जैं लागि लाग।
जहां प्रीति काची नहीं, काह पानी काह आग।।

ऐसी मस्ती आते ही प्रभु प्यारे के ओम् नाम की रट हृदय में लग जाती है, एक एक प्राण से उसी की ध्वनि आने लगती है, सचमुच प्रभु-नाम एक ऐसा नशा है जो तीव्र ही होता जाता है-

'सुरा त्वमसि शुष्मिणी।।' (यजु० १९-७)

बलकारी सुरा तू है।

अब वह अवस्था आने लगती है जब साधक अनुभव करने लगता है कि वह इस संसार सागर से पार होने के लिये एक दिव्य नय्या पर चढ़ बैठा है-

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।।

-ऋ० १०/ ६३/ १०

दिव्य नौका पर चढ़ बैठो- वह नय्या रक्षा करने वाली, विस्तृत-विशाल है, अपराध रहित है, उत्तम गति वाली और उत्तम चप्पू हैं इसके। यह दिव्य नौका परमात्मा का दृढ़ विश्वास ही तो है। इसी नौका पर बैठ कर उस प्रभु के पवित्र ओम् नाम की तीव्र बलकारी सुरा पीते चलो, और मन्द-मन्द चलने वाले वायु से नीले-नीले आकाश से, सर्वत्र व्यापक अग्नि से कहो-

ओम् उन्मादयत मरुत उदन्तरिक्ष मादय।
अग्न उन्मादया त्वमसौ मामनु शोचतु।। -अथर्व ६-१३०-४

(मरुतः) प्राण-वायुओ! (उत् मादयत) मुझे मस्ताना बना दो (अन्तरिक्ष उत् मादय) आकाश! मुझे बेसुध कर दे, (अग्ने त्वं उत् मादव) अग्ने! तू भी मुझे प्रेमोन्मत्त कर दे (असौ) वह भी (मां अनुशोचतु) मेरे लिये विकल हो जाय।'

ठीक ही तो है, जब साधक उसके लिये तड़प उठा है तो वह भी तो विकल हो-- कवि ने खूब कहा है-

उलफत का तब मजा है दोनों हों बेकरार।
दोनों तरफ हो आग बराबर लगी हुई।।

भक्त या साधक को ऐसा कहने का अधिकार हो जाता है। अब संसार के दु:ख उसके लिये प्रयोगशाला के अनुसन्धान हो जाते हैं और साधक दुनिया में, शरीर में रहता हुआ भी अपने आपको इस से सर्वथा पृथक् समझ कर न दु:खी होता है, न सन्तप्त। यही उपाय है भवसागर से पार होने का। ❐❐❐

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❒भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

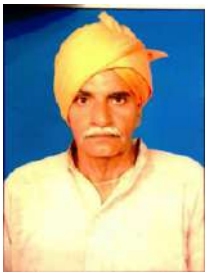

❖आकाश की ऊँचाई पर रहने वाले! समुद्र की गहराई को भी न भूल, क्योंकि मोती वहीं से प्राप्त होते हैं।

❖आत्मा ही स्वयं का मित्र है, आत्मा ही स्वयं का शत्रु है। जिसने स्वयं से स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली है वह मित्र, जो स्वयं से हार मान बैठा, वही स्वयं का शत्रु।

❖यदि दु:खों का अन्त चाहता है तो ईश्वर के ज्ञान, उसकी अनुभूति के बिना असंभव है। यह उसी प्रकार असंभव है जैसे कोई आकाश को चमड़े के समान लपेट लेने का कार्य कर दिखाए।

❖जिस प्रकार गुलाब के फूलों को तोड़ते समय कांटों की चुभन और तोड़ने के बाद फूल की सुगन्ध मिलती है, उसी प्रकार मंजिल पाने के लिए पहले कठिनाई झेलनी पड़ती है तथा बाद में मंजिल मिलते ही खुशी होती है।

❖नियम में स्थिर रहकर मर जाना अच्छा है, न कि नियम से फिसलकर जीवन धारण करना।

❖सच्चा प्रेम दुर्लभ है, सच्ची मित्रता उससे भी दुर्लभ है।

❖सुनें सबकी, लेकिन निर्णय खुद लेना सीखें।

❖सफलता कोई पड़ाव नहीं, बल्कि अनवरत चलने वाली यात्रा है।

❖परिवर्तन नई उमंग लेकर आता है।

❖अध्ययन में किया गया निवेश सर्वाधिक फल देता है।

❖उपवास आत्मा व अन्त:करण की शुद्धि का माध्यम है।

❖आत्मिक शांति से बड़ा सुख कोई और नहीं।

❖ज्यादा काम होने का मतलब–ज्यादा सुखी होना।

❖क्षणिक सफलता के आवेग में बहने से बचना चाहिये।

❖लक्ष्य के बिना जीवन निरर्थक है।

❖खामोशी भी अकसर कई सवालों का जवाब होती है।

❖ज्यादातर परेशानियों की वजह हम स्वयं होते हैं।

शांतिधर्मी के पाठकों से निवेदन

सम्मान्य पाठकगण, यह आपके आत्मीय सहयोग से ही सम्भव हुआ है कि शांतिधर्मी नियमित प्रकाशन के २० वर्ष पूर्ण कर चुका है। हम पूरी सावधानी से हर मास सभी पते जाँच कर पत्रिका डाक में प्रेषित करते हैं। कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पाती है। इस समस्या से हम परिचित हैं। हम डाक विभाग को सुधार नहीं सकते हैं। तथापि आपसे निवेदन करते हैं कि–

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/–(एक वर्ष) होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में एक वर्ष के लिए अतिरिक्त ३००/– जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप दस वर्षीय सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ आप अपनी प्रति ई मेल से भी पीडीएफ में मंगा सकते हैं। उसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं है।

३ २००४ से पूर्व के आजीवन सदस्यों से हमारा प्राय: कोई सम्पर्क नहीं हो पा रहा था। उन्हें पत्रिका मिल रही है या नहीं, या उनके लिये इसकी कोई उपयोगिता भी है या नहीं? छह माह से निरन्तर निवेदन करते जाने पर भी जिन पाठकों ने अपने पते की पुष्टि नहीं की है, हम उन्हें पत्रिका भेजना बंद कर रहे हैं।

४ वार्षिक शुल्क २००/– तथा १५००/– दस वर्ष का शुल्क है। कागज आदि के मूल्य अत्यंत बढ़ने के कारण यह वृद्धि बहुत लम्बे समय के बाद की गई है ।

आशा है आपका स्नेह बना रहेगा, और हम इस कार्य को और अधिक उत्साह से कर पायेंगे।

भवदीय **सहदेव समर्पित** सम्पादक शांतिधर्मी
पोस्ट बॉक्स नम्बर 19, मुख्य डाकघर जींद–126102
9996339552, 9416253826

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

हम आयुर्वेद की कायाकल्प पद्धति की स्निग्ध एवं समशीतोष्ण गुणधर्मो की शीघ्र एवं निश्चित गुणकारी औषधियों से कठिन, आप्रेशन वाले तथा असाध्य समझ लिये गए रोगों का जड़ से इलाज करते हैं।

❍ हार्ट ब्लॉकेज ❍ गैंग्रीन पथरी (किडनी तथा पित्ताशय की)
❍ विविध अंगों का दर्द ❍ एच आई वी ❍ अन्य अनेक व्याधियाँ

चिकित्सक

राकेश कुमार आर्य (खंडेलवाल) **राजेन्द्र आर्य** (खंडेलवाल)

आर्य आयुर्वेदिक चिकित्सालय

बल्हारपूर (महाराष्ट्र)-442701

मो. 9822723162 7020385470 9325526188

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

स्व. पं. चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल
पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

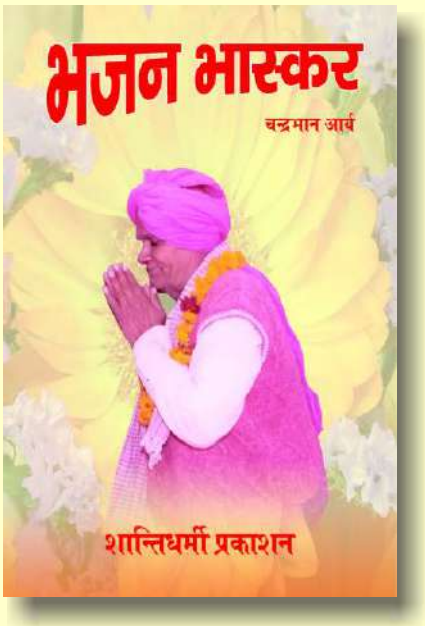

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन
756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)
दूरभाष : 9416253826, 9996338552

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (जनवरी, २०२०) P.R. No. : PKL 150-A/2020-22

॥ ओ३म् ॥

Your child's bright future with Bharteey Culture ....

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

SHIVALIK गुरुकुल

A Modern C.B.S.E. Pattern Residential School Only for Boys

आचार्य नन्दकिशोर
(निदेशक)

"शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, सेवा"

मूलभूत सुविधाएँ

❖ शहर के शोरगुल से दूर 16 एकड़ के विशाल परिसर में स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त वातावरण ❖ आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल एवं हवादार कक्षा-कक्ष ❖ अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत प्रशिक्षण के लिए भाषा प्रयोगशाला ❖ सभी विषयों की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय ❖ CCTV कैमरे से युक्त छात्रावास एवं विद्यालय ❖ आधुनिक उपकरणों से युक्त शूटिंग रेंज ❖ घुड़सवारी ❖ नियमित अध्यापक-अभिभावक मीटिंग ❖ अत्याधुनिक Computer प्रयोगशाला ❖ SMS द्वारा सूचना प्रेषण ❖ सुसज्जित रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान, गणित, सामाजिक और विज्ञान प्रयोगशालाएं ❖ समर्पित एवं अनुभवी स्टाफ ❖ संगीत कक्ष ❖ गुरुकुल App के माध्यम से छात्रों की दैनिक शैक्षिक एवं उपस्थिति जानकारी ❖ सभी सुविधाओं से युक्त वातानुकूलित छात्रावास ❖ विभिन्न खेल प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षकों की व्यवस्था ❖ प्रतिदिन सन्ध्या-यज्ञ के लिए यज्ञशाला ❖ विस्तृत व हरे-भरे खेल के मैदान।

FEE STRUCTURE

Class	Amount
4th to 6th	1,25,000/-
7th to 8th	1,30,000/-
9th to 10th	1,35,000/-
11th*	1,45,000/-

प्रवेश प्रारम्भ

कक्षा चौथी से ग्याहरवीं
Class IV to XI
(Medical, Non Medical, Commerce)
2020-21

VILL. ALIYASPUR, P.O. SARAWAN, MULLANA, AMBALA-133 206 (HARYANA)

shivalikgurukul.ambala@gmail.com • www.shivalikgurukul.com

Admission Helpline : 9671228002, 9671228003, 8813061212, 8295896525, 9053720871

Facebook@ShivalikGurukul Please Like, Share and Subscribe our School Youtube Channel Shivalik Gurukul for Videos and More Updates

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् । अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम् ।